Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 2 • 17 - 23 अक्टूबर, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 15-10-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

अर्हत उवाच

सव्वमेयं णिराकिच्चा,
ते ठिया सुसमाहिए।

जो अनुकूल परिषहों को निरस्त कर देते हैं वे समाधि में स्थित हो जाते हैं।

श्रीमद्जयाचार्य का 220वाँ जन्म दिवस

आचार्य भिक्षु, श्रीमज्जयाचार्य और गुरुदेव तुलसी तेरापंथ धर्मसंघ के शताब्दी पुरुष : आचार्यश्री महाश्रमण

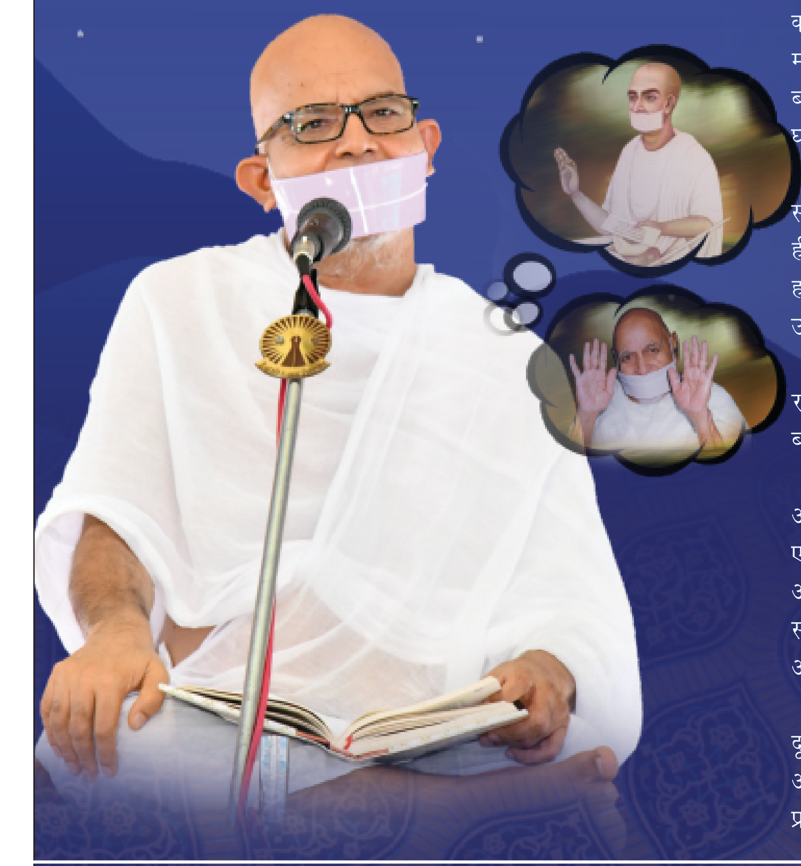

ताल छापर, ८ अक्टूबर, २०२२

महातपस्वी, महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि भगवान गौतम श्रमण भगवान महावीर को वंदन-नमस्कार करते हैं। वंदन करके बोले–भंते! क्या जीव बढ़ते हैं, घटते हैं अथवा अवस्थित रहते हैं? गौतम! जीव न बढ़ते हैं, न घटते हैं, अवस्थित हैं, यह उत्तर दिया गया।

हमारी दुनिया में अनंत जीव हैं। अनंत काल से एक भी जीव की संख्या बढ़ी नहीं और न ही घटी। जितने जीव अनंत काल पहले थे, उतने ही आज हैं, और अनंत काल तक रहेंगे। यह एक लोक स्थिति-मर्यादा हमारी सृष्टि की है। जीव एक समान रूप में रहते हैं। अजीव भी जितने हैं, उतने ही रहते हैं। जीव का अजीव या अजीव का जीव होता नहीं है।

प्रश्न है कि जब जीव बढ़ते नहीं तो फिर आबादी की चिंता क्यों हो रही है। मनुष्यों की संख्या तो घट-बढ़ सकती है, पर जीवों की संख्या नहीं बढ़ती।

आज आश्विन शुक्ला चतुर्दशी है। एक महापुरुष बनने वाले शिशु ने आज के दिन जन्म लिया था। आज से २१६ वर्ष पहले श्रीमद्जयाचार्य का एक शिशु के रूप में जन्म हुआ था। जयाचार्य हमारे धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य थे। मैं हमारे धर्मसंघ के अतीत के आचार्यों में तीन आचार्यों में समानता देखता हूँ। वे हैं–परम वंदनीय आचार्य भिक्षु, श्रीमद्जयाचार्य और आचार्य तुलसी।

पहली समानता तो यह है कि ये तीनों ही आचार्य मारवाड़ से हुए हैं। दूसरी समानता है–आचार्य भिक्षु तेरापंथ की पहली शताब्दी के प्रथम आचार्य, दूसरी शताब्दी के प्रथम आचार्य जयाचार्य और तीसरी शताब्दी के प्रथम आचार्य आचार्यश्री तुलसी हुए हैं।

तीनों हमारे तेरापंथ के शताब्दी पुरुष हो गए। तीसरी समानता है कि तीनों आचार्यों ने ज्ञान और साहित्य के क्षेत्र में अच्छा सृजन किया है। कितना साहित्य राजस्थानी भाषा में है। तीनों अच्छे साहित्य सृजक थे। चौथी समानता देखें कि हमारे धर्मसंघ में नवीनता को लाने वाले ये तीनों आचार्य हैं।

श्रीमद्जयाचार्य एक बाल योगी के रूप में हमारे धर्मसंघ में दीक्षित हुए थे। हमारे छोटे-छोटे संत श्री जयाचार्य जैसे ज्ञानी बने। मैं जयाचार्य को वंदन करता हूँ। आज उनका २२०वाँ जन्म दिवस है। हमारा तत्त्वज्ञान-चारित्र बढ़ता रहे।

आज चतुर्दशी है। पूज्यप्रवर ने हाजरी-मर्यादाओं का वाचन करते हुए प्रेरणा प्रदान करवाई। साधु-साध्वियों से तत्त्वज्ञान के प्रश्नोत्तर किए। साधुचर्या एवं तेरापंथ के सिद्धांतों को समझाया। कल्याण परिषद व समीक्षा परिषद, चिंतन-मनन के लिए है। इनमें दुराग्रह न हो। विचार रखे जा सकते हैं। दुराग्रह से विकास में बाधा है।

नवयुवकों का शिविर लगा है। नवयुवकों को भी तेरापंथ के सिद्धांतों की जानकारी होनी चाहिए। नवदीक्षित साध्वियों ने साधुओं को वंदना की। मुनि धर्मरुचि जी ने साध्वियों को प्रेरणा प्रदान करवाई।

पूज्यप्रवर ने साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की सातवीं मासिक पुण्यतिथि पर स्मरण किया। पूज्यप्रवर ने नवयुवक शिविरार्थियों को सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण करवाई। साधु-साध्वियों ने लेख पत्र का वाचन किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि नमस्कार महामंत्र का जप एक साधना है। साधना से व्यक्ति का विकास होता है।

अमृतवाणी के वार्षिक अधिवेशन का आयोजन

गुरुओं की कल्याणकारी वाणी का संरक्षण करती है-अमृतवाणी : आचार्यश्री महाश्रमण

सद्गुण रूपी आभूषणों से अपने जीवन को शोभायमान करें : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १० अक्टूबर, २०२२

जिन शासन के प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि सुंदर होना और सुंदर दिखना इन दोनों बातों में कुछ अंतर हो सकता है। सुंदरता बाहर से तो दिखती है, पर वास्तव में भीतर से कितना सुंदर है, वह अलग बात है। अध्यात्म की दृष्टि से देखें तो ये आभूषण भी एक प्रकार का भार है।

बाहर के आभूषण पहनें या न पहलें पर भीतर के भूषण पहनें। सद्गुण रूपी भूषण हम धारण कर अपने आपको शोभायमान करें। हाथ का आभूषण है–दान करना। भावना से दान दें। गुरु को नमन करना सिर का भूषण है। दान की वृत्ति औदार्य की द्योतक है। मुँह का आभूषण है–सत्य भाषा बोलना। कान का सद्गुण भूषण है–श्रुत-आर्ष वाणी सुनो। ज्ञान ग्रहण करें।

कई गृहस्थों के धार्मिक ज्ञान की चेतना अच्छी होती है। हृदय का भूषण है–सरलता रखना। भुजाओं का भूषण पौरुष है। उसका बढ़िया उपयोग हो। सद्गुण बिना पैसे के आभूषण है, जो हमारे जीवन में रह सकते हैं। जीवन को शोभायमान कर सकते हैं। बाहरी आभूषणों के तो पैसे खर्च करने पड़ते हैं। पुण्य बल का अच्छा योग तो शरीर बिना बाहरी आभूषण के भी सुंदर लग सकता है।

पूज्यप्रवर ने कालू यशोविलास का सुमधुर विवेचन किया। पूज्य कालूगणी करुणावान थे तो अनुशासन भी कड़क करवाते थे।

सुशीला सुराणा ने पूज्यप्रवर से १०१ की तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। आज इनके ९१ की तपस्या है। ये सुजानगढ़ के मोहनलाल सुराणा की धर्मपत्नी हैं।

अमृतवाणी गुरुदेव की देशना को देश-विदेश में, घर-घर पहुँचा रही है। अमृतवाणी के अध्यक्ष प्रकाश बैद ने पूज्यप्रवर की सन्निधि में मंचीय कार्यक्रम के अंतर्गत अपनी भावना अभिव्यक्त की। अमृतवाणी सन् १९७८ में पूर्वाचार्यों एवं वर्तमान आचार्यप्रवर की अमृतवाणी को जन-जन तक पहुँचा रही है। महामंत्री अशोक पारख ने भी अपनी भावना की अभिव्यक्ति दी। प्रसारण सहयोगियों का सम्मान किया गया।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि वाणी का अपना सामर्थ्य होता है। वाणी के द्वारा दुखी आदमी को सुखी बनाया जा सकता है। आध्यात्मिक, जीवनोपयोगी व कल्याणी वाणी से एवं गुरुओं और साधुओं की वाणी से आत्मकल्याण हो सकता है। वाणी का संरक्षण करने वाला अमृतवाणी उपक्रम है, जो गुरुदेव तुलसी के समय से ये कार्य हो रहा है। पूज्यप्रवरों के प्रवचन सुरक्षित हैं। वाणी का संप्रसारण भी हो रहा है। अमृतवाणी खूब आध्यात्मिक, धार्मिक कार्य करती रहे।

मनोज चौपड़ा (बायतू) ने बायतू मर्यादा महोत्सव आमंत्रण गीत की प्रस्तुति दी। संजय-वनीता भानावत, पंकज धारीवाल, मिनाक्षी भूतोड़िया ने गीत की प्रस्तुति दी।

स्वर संगम प्रतियोगिता के फाइनल चरण का आयोजन

ताल छापर, ९ अक्टूबर, २०२२

अमृतवाणी द्वारा आयोजित स्वर संगम प्रतियोगिता के फाइनल राउंड का आयोजन आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में आचार्य कालू महाश्रमण समवसरण में दोपहर दो बजे से आयोजित किया गया। इसमें देश भर से चुनकर आए १४ प्रतिभागियों ने अपनी-अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध बनाया। इसमें प्रथम स्थान पंकज धारीवाल-तेजपुर, द्वितीय स्थान निकिता दुगड़-जयपुर और तृतीय स्थान मुस्कान सुराणा-दिल्ली ने प्राप्त किया।

भगवान महावीर के निर्वाण दिवस एवं दीपावली पर्व पर अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स की ओर से अध्यात्मिक मंगल कामना

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
17 - 23 अक्टूबर, 2022

✦ देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर करता है। यदि बाल पीढ़ी अच्छी होगी तो देश का भविष्य भी सुनहरा बन सकेगा।
—आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य ही उपाध्याय का दायित्व निर्वहन करते हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ४ अक्टूबर, २०२२

आचार की देशना करने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न पूछा गया कि भंते! आचार्य और उपाध्याय अपने विषय में अग्लान भाव से गण का संग्रहण करते हैं। वे कितने भव में सिद्धत्व को प्राप्त करते हैं? या सब दुखों का अंत करते हैं।

एक ही व्यक्ति आचार्य और उपाध्याय का दायित्व ओढ़े हुए हो सकता है। हमारे धर्मसंघ में तो भिक्षु स्वामी से लेकर आज तक उपाध्याय का पद किसी को नहीं दिया गया है। हमारे धर्मसंघ में उपाध्यायात्व आचार्य में ही निहित हो सकता है। आचार्य वही बन सकता है, जिसको दीक्षा लिए हुए कम से कम पाँच वर्ष हो गए हों और जिसको दीक्षा लिए हुए कम से कम तीन वर्ष हो गए हों, वह उपाध्याय बन सकता है।

मोक्ष जाने के तीन विकल्प हैं। कोई-कोई आचार्य/उपाध्याय उसी जन्म के बाद मोक्ष में जा सकता है। कोई दूसरे भव में सिद्ध हो जाते हैं अथवा तीसरे भव में तो मोक्ष जाते ही जाते हैं, उसका अतिक्रमण नहीं करते हैं। आचार्य, उपाध्याय के मोक्ष में जाने के ये तीन विकल्प हैं। व्याख्या में आचार्य-उपाध्याय के ज्यादा से ज्यादा पाँच भव बताए गए हैं। आचार्य, उपाध्याय के मोक्ष में जाने के ये तीन विकल्प हैं। व्याख्या में आचार्य-उपाध्याय के ज्यादा से ज्यादा पाँच भव बताए गए हैं।

आचार्य ३६ गुणों के धारक होते हैं। उपाध्याय २५ गुणों के धारक होते हैं। आचार्य और उपाध्याय दोनों ही पद एक ही व्यक्ति निर्वहन करते हैं, तो महत्त्वपूर्ण बात है। परम पूज्य आचार्य भिक्षु हमारे प्रथम आचार्य थे। उनमें कितना विशेष ज्ञान था। अतीत के दस आचार्य हमारे लिए तो परम पूजनीय हैं। आचार्य एक बहुत उच्च स्थान पर वे आसीन होते हैं। हमारे धर्मसंघ में तो आचार्य सर्वोच्च स्थान पर होते हैं।

जितने साधु-साध्वियाँ आचार्य की निश्रा में हैं, आचार्य उनको चित्त समाधि देने का प्रयास करे। उनको सहयोग दे। आचार्य तुलसी को हमने देखा है, कितना श्रम, कितना सहयोग प्रदान किया है। मुझे भी कितना आगे बढ़ाया। आचार्य-उपाध्याय के इस तरह निर्जरा होने से वे पाँच भवों में मोक्ष जा सकते हैं।

पूज्यप्रवर ने कालू यशोविलास का विवेचन किया। प्रवचन पूर्व से आध्यात्मिक अनुष्ठान करवाया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

दूसरों पर झूठे आरोप लगाने से बचने का करें प्रयास: आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ५ अक्टूबर, २०२२

आगमवेत्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र की विवेचना करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में एक प्रश्न किया गया कि भंते! जो पुरुष मिथ्या, असद्भूत, अभ्याख्यान, दोषारोपण के द्वारा किसी दूसरे को आरोपित करता है, उसके किस प्रकार के कर्मों का बंध होता है?

जीवन में आदमी कभी झूठ बोलकर दूसरे पर मिथ्या अभियोग लगाने का प्रयास भी कर लेता है। अट्ठारह पापों में यह एक पाप है—अभ्याख्यान। कई बार आदमी ऐसा आरोप लगा देता है कि दूसरे को फँसना पड़े। गृहस्थों के संपत्ति आदि होती है, उसके लिए कितने लोग न्यायालय में जाते होंगे। परिवार की बात परिवार में ही समाहित हो जाए तो अच्छी बात है। न्याय, न्याय के तरीके से पाएँ। झूठा आरोप न लगाएँ। न्याय का रास्ता ईमानदारी का है।

जो पुरुष मिथ्या, असद् अभ्याख्यान के द्वारा दूसरों को आरोपित करता है, उसके उसी प्रकार के कर्मों का बंध करता है। वह जहाँ उत्पन्न होता है, वहाँ उसी प्रकार के कर्मों का प्रतिसंवेदन कर वेदन कर निर्जरण करता है। अगर प्रायश्चित कर लें तो पाप शुद्ध हो सकते हैं। आत्मा निर्मल बन सकती है। यह एक घटना से समझाया। साधु पर तो झूठा आरोप लगाएँ ही नहीं। पाप कर्म किया है, तो फल तो भोगना ही पड़ेगा।

कर्म के दरबार में छोटे-बड़े का कोई भेद नहीं है। कंकड़ आकाश में फेंका है तो वह तो नीचे आएगा ही। सीताजी पर भी झूठा आरोप लगाया गया था।

साधु हो या गृहस्थ, यह संकल्प रहे कि जिंदगी में किसी पर भी झूठा आरोप नहीं लगाना। इससे राग-द्वेष बढ़ सकता है।

आज विजयादशमी दशहरा है। रावण का जैसे रामायण में वर्णन है, तो रावण का वर्चस्व-पुण्य भी था। जैसे सूर्य उदय होता है, तो न रात्रि रहती है, न रात्रिपति चाँद ग्रहगण दिखते हैं। एक समय में रावण चरित्रवत्ता पुरुष था। जैन रामायण के हिसाब से लक्ष्मणजी ने रावण को मारा था। सुदर्शन चक्र का लक्ष्मणजी ने उपयोग कर रावण के सिर को धड़ से अलग कर दिया था। वासुदेव प्रतिवासुदेव को मारकर सत्ता में आते हैं। राम ने भी रावण की प्रशंसा की थी। हम तो अध्यात्म को मानने वाले हैं। दस लाख योद्धाओं को जीतने वाला आदमी इतना बड़ा विजयी नहीं है, जो अपनी आत्मा को जीत ले वो परम विजयी होता है। हम आत्मविजय की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करें। साध्वी गुरुयशा जी को आज साठ वर्ष पूरे हो रहे हैं। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आगम के अनुसार साठ वर्ष का जाति स्थविर हो जाता है। अपनी शक्ति का उपयोग करती रहो। जितनी सेवा-स्वाध्याय हो सके करती रहो। चित्त समाधि रहे।

साध्वी गुरुयशा जी ने अपनी भावना श्रीचरणों में अर्पित की। आचार्यप्रवर की सन्निधि में साध्वी अणिमाश्री जी, साध्वी मंगलप्रज्ञा जी और साध्वी सुधाप्रभा जी के न्यातिलों ने (महादानी शुभकरण चौरड़िया) परिवार के २५ सदस्यों ने एक साथ पचरंगी तपस्या का प्रत्याख्यान किया एवं आशीर्वाद प्राप्त किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आदर्श विद्या मंदिर स्कूल में आचार्य महाश्रमण प्रकोष्ठ का लोकार्पण

अहिंसा और अपरिग्रह की साधना धर्म है : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ६ अक्टूबर, २०२२

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र आगम में प्रश्न किया गया कि भंते! क्या असुर कुमार देव आरंभ और परिग्रह से युक्त होते हैं? उत्तर दिया गया—गौतम! असुर कुमार देव आरंभ और परिग्रह से युक्त होते हैं, मुक्त नहीं होते हैं।

चारों गतियों में आरंभ और परिग्रह हर जीव के होती है। गृहस्थों के तो हर क्रिया में जीव हिंसा होती रहती है। शरीरधारी जीव से हिंसा जुड़ी रहती है। साधु के भी हिंसा हो सकती है। देव और नरक में भी आरंभ और परिग्रह होता है। गार्हस्थ्य में त्रस और स्थावर जीवों की हिंसा हो जाती है। गृहस्थ के परिग्रह भी होता है। गृहस्थ यह चिंतन करे कि मैं आरंभ और परिग्रह का कितना अल्पीकरण कर सकता हूँ।

गृहस्थ को चौदह नियम रोज चितारने चाहिए। हिंसा और परिग्रह आपस में जुड़े हुए हैं। अहिंसा और अपरिग्रह की साधना धर्म है। साधु और गृहस्थ के जीवन में हिंसा और परिग्रह के विषय में बड़ा अंतर है। साधु तो कंचन-कामिनी के त्यागी होते हैं। दुःखी आदमी के दुखड़े को सुन लेने से उसे कुछ शांति मिल सकती है।

साधु अहिंसक होते हैं। वे हिंसा न करते हैं, न करवाते हैं। इसलिए तो सौ वर्ष का गृहस्थ भी नौ वर्ष के साधु को वंदन करता है। साधु अणगार है, वे संयोगों से मुक्त होते हैं। साधु संबंधातीत चेतना से जागृत होते हैं। साधु और गृहस्थ के जीवन में त्याग और संयम का अंतर होता है। गृहस्थ आरंभ और परिग्रह का जितना त्याग कर सकते हैं, करने का प्रयास करें। इससे आत्मा हल्की हो सकती है।

पूज्यप्रवर ने कालूयशोविलास के प्रसंगों को विस्तार से व्याख्यायित किया। तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि भगवान महावीर की वाणी से रोहणीय चोर जैसे का जीवन बदल सकता है। मन के परिणाम बदलते हैं तो वीतराग वाणी पर श्रद्धा हो सकती है। जहाँ संयोग है, वहाँ वियोग भी है। हमें दोनों स्थिति में आर्त-ध्यान में नहीं जाना चाहिए। हमारा दृष्टिकोण सम्यक् हो। सम्यक्त्व मोक्ष का द्वार है। प्रातःकाल आचार्यश्री महाश्रमण जी छापर में ही स्थित आदर्श विद्या मंदिर के प्रांगण में पधारे। उक्त विद्या मंदिर में नवनिर्मित आठ कमरे 'आचार्य महाश्रमण प्रकोष्ठ' के नाम का लोकार्पण आचार्यश्री के मंगलपाठ से हुआ। कार्यक्रम में राज्यसभा के पूर्व सांसद डॉ० महेश शर्मा आदि भी उपस्थित थे। इस अवसर पर आचार्यश्री ने समुपस्थित विद्यार्थियों व अन्य जनता को मंगल पाथेय प्रदान किया। डॉ० महेश शर्मा तथा महासभा के महामंत्री विनोद बैद ने भी अपना वक्तव्य दिया। तदुपरांत आचार्यश्री कस्बे के अनेक श्रद्धालुओं को अपने दर्शन और मंगल आशीर्वाद से लाभान्वित करते हुए चातुर्मास प्रवास स्थल में पधारे।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि गुरु के अभाव में शिष्य भटक सकता है।

मुनि नमि कुमार जी ने किया ३६ की तपस्या का प्रत्याख्यान

सुनाम।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने सहयोगी मुनि नमि कुमार जी के इसी चातुर्मास में दूसरे लंबे तप की संपन्नता पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि परमपूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी के द्वारा दीक्षित मुनि नमि कुमार जी ने तपस्या का कीर्तिमान रच दिया। ४ वर्षों से चातुर्मास में दो बड़ी तपस्या करने का लक्ष्य बनाकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया। सूरत में ३८, ३१, बैंगलुरु में २८, २६, ३०, इंदौर में ६२, २७, सुनाम में ३४ और ३६ दिनों का तप करके दृढ़-मनोबल, संकल्पबल का परिचय दिया है। चेन्नई में शेषकाल में ३३ दिनों का और एक मासखमण पूज्यप्रवर की सन्निधि में गुवाहाटी में २७ दिन का तथा एक पूज्यप्रवर की सेवा में पैदल विहार करते-करते जोवनेर से बीदासर तक ३२ दिन का करके सबको आश्चर्यचकित कर दिया। तपस्या में जाप, ध्यान, स्वाध्याय, कायोत्सर्ग का क्रम निरंतर गतिमान रहता है। मैं यही मंगलकामना करता हूँ कि इसी तरह पूज्यप्रवर की दृष्टि अनुसार अपने लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़ते रहें।

मुनि नमि कुमार जी ने अपनी भावना प्रकट करते हुए सबसे पहले पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की कि मुझे इस अवस्था में दीक्षा प्रदान करके अपनी अंतरंग परिषद का सदस्य बना लिया और उन्होंने मुझे उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी स्वामी का वंदना करवाई। मुनिश्री की सतत प्रेरणा और सामायिक शिक्षा से मैं इस प्रकार नियोजित हो सका। अग्रणी होते हुए भी मेरी हर तरह की सेवा करते हैं। मुनि अमन कुमार जी का भी मुझे काफी सहयोग मिलता है, जिससे यात्रा में कोई दिक्कत नहीं होती। सुनाम क्षेत्र के भाई-बहन भी साताकारी हैं, सेवा का पूरा ध्यान रखते हैं, इस प्रकार मुनिश्री ने अपने हृदय के भाव प्रकट किया।

कार्यक्रम में गुरुदेव के संदेश का वाचन पंजाब प्रांतीय सभा के अध्यक्ष केवल कृष्ण जैन ने तथा दूसरे संदेश का वाचन महेंद्र जैन ने शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी, शासनश्री मंजुरेखा जी के विचार सुरेश जैन, शासनश्री सोमलता जी के विचार रामलाल जैन, मुनि चैतन्य कुमार जी के विचार संजय नाहटा ने, मुनि अर्हत कुमार जी के विचार अरिहंत जैन ने, मुनि सुधाकर जी के विचार संदीप जैन ने, प्रकट किए। मुनि चैतन्य कुमार जी का गीत महिला मंडल ने संगान किया। मुनि रश्मि कुमार जी का गीत भी प्रस्तुत हुआ। मुनि अमन कुमार जी ने पंजाबी भाषा में तथा मुनि कमल कुमार जी स्वामी ने विविध भारतीमय गीत प्रस्तुत किया। मुनिश्री ने गुरुदेव की दृष्टि अनुसार कार्तिक कृष्णा को बिहार कर इंदिरा बस्ती तेरापंथ भवन में जाने की घोषणा की। इस अवसर पर काफी उपवास, एकासन हुए। संजीव जैन, नीतू जैन ने पंचोले का प्रत्याख्यान किया। रूपेश जैन ने नव दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

आत्मदर्शन का महापर्व है - पर्युषण

साक्री (महाराष्ट्र)।

साक्री में उपासक श्रेणी द्वारा पर्युषण पर्वाराधना मुख्य उपासिका—दमयंती गेलड़ा, उपासिका साधना गेलड़ा, उपासिका मीना संचेती की उपस्थिति में सानंद संपन्न हुई।

पर्व के प्रथम दिन की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के साथ की गई। स्थानीय सभा द्वारा उपासिका बहनों का स्वागत किया गया। मुख्य उपासिका दमयंती ने आचार संहिता एवं श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। तीनों बहनों ने आचार संहिता के नियमों के पालन का संकल्प किया।

प्रतिदिन सुबह प्रार्थना का क्रम चला। हर दिन नियोजित दिवस पर गीतिका का संगान एवं दिवस का महत्त्व बताया गया। साथ में कालचक्र, भगवान ऋषभ एवं भगवान महावीर के जीवन यात्रा का वर्णन चला। साथ में ठाणं सूत्र के कुछ अध्याय के बारे में भी बताया गया। वाणी संयम दिवस पर टीना पगारिया ने अपने विचार रखे। सामायिक दिवस पर अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया गया। जप दिवस के उपलक्ष्य में १३ घंटों का नमस्कार महामंत्र का जप किया गया।

हर रोज दोपहर में २ से ३ तक तत्त्वज्ञान पर चर्चा चली। सायंकालीन वंदना का क्रम सुचारु रूप से चला।

प्रतिक्रमण में भी भाई-बहनों एवं बच्चों की उपस्थिति अच्छी रही। रात्रिकालीन कार्यक्रम चला, जिसमें रोज नए-नए विषयों का वर्णन चला, जैसे सामायिक का महत्त्व, अर्हम् वंदना के बारे में जानकारी, तेरापंथ की मान्यता आदि-आदि।

संवत्सरी महापर्व—सुबह सूर्योदय से ८ प्रहरी पौषध एवं प्रार्थना से महापर्व के दिवस की आराधना की शुरुआत हुई। दोपहर तक कार्यक्रम चला। महामंत्र के उच्चारण के बाद भूषण ने मंगलाचरण किया। मीना ने गीतिका का संगान किया। ज्ञानशाला के बच्चों ने संवत्सरी पर एक्सन सॉन्ग प्रस्तुत किया। स्थानीय महिला मंडल की बहनों ने 'सोलह सतियों' पर संवाद प्रस्तुत किया।

उपासिका दमयंती ने भगवान महावीर के जीवन यात्रा का वर्णन करते हुए भगवान महावीर ने आज से २६०० वर्ष पूर्व उपसर्गों में कैसे समता भाव रखा, दास प्रथा का निर्मूलन एवं नारी उत्थान के महत्त्वपूर्ण सूत्र दिए। भगवान महावीर ने अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत के सूत्र दिए जो विश्व के सारी समस्याओं का निराकरण कर, विश्व शांति के श्रोत बन सकते हैं।

उपासिका मीना ने गणधर परंपरा एवं साधना ने आचार्य परंपरा का वर्णन किया। संघगान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

रात्रि में प्रतिक्रमण के पश्चात बच्चों एवं बहनों को गिफ्ट दिए गए एवं उपासक श्रेणी के मंगलभावना का क्रम भी चला।

मैत्री दिवस पर सूर्योदय के साथ ही क्षमापना का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

पर्युषण महापर्व पर विविध कार्यक्रम

बैंगलोर।

मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप के तत्त्वावधान में पर्युषण काल में सातों ही दिन अलग-अलग विषयों पर रात्रिकालीन कार्यक्रम आयोजित हुए। प्रथम दिन भज मन भिक्खु स्याम कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु श्रमण असाधारण प्रतिभा, लौहपुरुष के साथ ही मेधा सूक्ष्मग्राही के धनी तो थे ही वे संयम के सजग प्रहरी थे। आचार्य भिक्षु सत्य के महान उपासक थे। आचार्य भिक्षु सदैव ही शिक्षा एवं संस्कारों की वकालत करते रहे।

द्वितीय दिवस 'मत कीजिए ऐसे काम, जाने पड़े नरक के धाम' विषय पर उद्‌बोधन दिया। नरक में जाने के कारणों पर विश्लेषण दिया। तृतीय दिवस पर सुपात्र दान के महत्त्व पर प्रकाश डाला। एक श्रावक भी दान के द्वारा तीर्थंकर नाम गौत्र का बंधन कर सकता है। सभी को सुपात्र दान की भावना रखनी चाहिए। चतुर्थ दिवस पर तोड़े संसार का पिंजरा पर वक्तव्य देते हुए कहा कि संसार में दो प्रकार के व्यक्ति होते हैं—एक आत्मस्थ एवं दूसरे शरीरस्थ। आत्मस्थ व्यक्ति का चिंतन रहता है कि यह दुर्लभ मानव जीवन प्राप्त हुआ है, इस नश्वर शरीर से आत्मज्ञान प्राप्त करूँ, क्या पता कौन-से समय में प्राण पखेरू उड़ जाएँ। इसलिए जितना लाभ उठा सकूँ, उठा लूँ।

पंचम दिवस पर मुनि अर्हत कुमार जी का साक्षात्कार हुआ, जिसमें श्रावकों ने अपनी अनेक जिज्ञासाओं का समाधान किया। षष्ठम् दिवस पर 'हम कहाँ से आए और कहाँ जाएँगे' इस विषय पर सुंदर विवेचन किया। मुनिश्री ने कहा कि हम चारों गतियों से आए हैं और मोक्ष तक जाना है। चारों गतियों में जाने के कारणों से सविस्तार समझाया। सप्तम् दिवस पर स्वर्णिम गीतों की सभी श्रावक-श्राविकाओं द्वारा प्रस्तुतियाँ की गई। मुनि जयदीप कुमार जी द्वारा सातों ही दिन गीतिका की प्रस्तुति दी गई।

पर्युषण महापर्व का आयोजन

चुरू।

साध्वी प्रशमरति जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व तेरापंथ भवन में मनाया गया।

पर्युषण पर्व का प्रथम दिन खाद्य संयम दिवस मनाया गया। साध्वी कारुण्यप्रभा जी ने खाद्य संयम दिवस पर अपने विचार रखते हुए कहा कि जो अपनी रसना पर नियंत्रण नहीं करता वह अनेक रोगों को निमंत्रण देता है। अपेक्षा है हम अपनी रसना पर संयम रखें। छोटे-छोटे प्रयोगों से हम खाद्य संयम का अभ्यास करें। साध्वी अमितयशा जी ने भी खाद्य संयम दिवस पर अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वी शांतिप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। साध्वी प्रशमरती जी ने भगवान ऋषभ के जीवन प्रसंग सुनाए।

द्वितीय दिवस 'स्वाध्याय दिवस' के रूप में मनाया। साध्वी कारुण्यप्रभा जी ने स्वाध्याय दिवस पर कहा कि स्वाध्याय जीवन निर्माण का सशक्त माध्यम है। साध्वी अमितयशा जी, साध्वी शांतिप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया।

पर्युषण पर्व का तीसरा दिन सामायिक दिवस के रूप में मनाया गया। साध्वी अमितयशा जी ने अभिनव सामायिक का प्रयोग कराया। साध्वी कारुण्यप्रभा जी ने सामायिक दिवस पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सामायिक समता की साधना का सशक्त माध्यम है। सामायिक करने से आने वाले कर्म रुक जाते हैं। अर्थात् नए कर्मों का बंधन नहीं होता, स्वाध्याय करने से निर्जरा होती है।

चौथा दिवस मौन दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी कारुण्यप्रभा जी ने कहा कि इंसान चाहे तो इस जिह्वा से काम बना सकता है, चाहे तो बिगाड़ सकता है। इंसान को सोचकर बोलना चाहिए। मीठी वाणी जहाँ अमृत का काम करती है वहीं कटु वाणी जहर का काम करती है। साध्वी शांतिप्रभा जी ने गीत का संगान किया। साध्वी अमितयशा जी ने कहा कि वाणी वीणा का काम करे जहर का नहीं। साध्वी प्रशमरति जी ने अधिक से अधिक मौन करने की प्रेरणा प्रदान की।

पर्युषण पर्व का पाँचवा दिन अणुव्रत चेतना दिवस के रूप में मनाया गया। साध्वी कारुण्यप्रभा जी ने कहा कि अणुव्रत का दर्शन आत्मानुशासन की चेतना को जगाने का दर्शन है। क्योंकि अणुव्रत का विश्वास व्यक्ति के बाहरी परिवेश को बदलने में नहीं, बल्कि आंतरिक चेतना के रूपांतरण में है।

साध्वी अमितयशा जी ने कहा कि जीवन एक मकान है तो चरित्र उसकी बुनियाद है। मनुष्य अणुव्रती बनकर अपने चरित्र के निर्माण का प्रयोग करे। साध्वी शांतिप्रभा जी ने गीत का संगान किया। साध्वी प्रशमरति जी ने अणुव्रत के नियमों को अपनाने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रचना कोठारी ने अपने विचार व्यक्त किए।

पर्युषण पर्व के छठे दिन जप दिवस पर साध्वी अमितयशा जी ने कुछ मिनट सामूहिक जप करवाया। साध्वी कारुण्यप्रभा जी ने कहा कि सभी धर्म संप्रदायों में मंत्र साधना की परंपरा रही है, मंत्र साधना के पास मुख्य तीन शक्तियाँ होती हैं—आत्मशक्ति, मंत्रशक्ति एवं इष्टशक्ति। श्रद्धा से अगर अपने इष्ट का स्मरण किया जाता है तो निश्चय ही फलदायी होता है। साध्वी शांतिप्रभा जी ने जप दिवस पर गीत का संगान किया। साध्वी प्रशमरति जी ने जप कब, कैसे, कहाँ करना चाहिए इसकी प्रेरणा दी।

सातवें दिन ध्यान दिवस पर साध्वी कारुण्यप्रभा जी ने कहा कि स्थिर दीप की लौ के समान मात्र शुभ लक्ष्यों में लीन हो जाना शुभ ध्यान है। साध्वी अमितयशा जी ने कहा कि चिंतनीय विषय में मन को एकाग्र करना ध्यान है। साध्वी शांतिप्रभा जी ने ध्यान दिवस पर गीत का संगान किया। साध्वी प्रशमरति जी ने भगवान महावीर के जीवन-दर्शन के बारे में बताया।

पर्युषण पर्व का आठवाँ दिन 'संवत्सरी महापर्व' के रूप में मनाया गया। लगभग ६ घंटे प्रवचन कार्यक्रम चला। साध्वी अमितयशा जी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। साध्वी शांतिप्रभा जी ने तेरापंथ के आचार्यों के बारे में बताया। साध्वी कारुण्यप्रभा जी ने जैन धर्म के प्रभावक आचार्यों के बारे में बताया। साध्वी प्रशमरति जी ने चंदनबाला ११ गणधर आदि के बारे में विस्तार से बताया।

अनेक भाई-बहनों ने अष्ट प्रहरी, छह प्रहरी, चार प्रहरी पौषध किए। पर्युषण काल में अनेकों बहनों ने सायं प्रतिक्रमण में भाग लिया।

क्षमायाचना—साध्वीश्री जी के सान्निध्य में क्षमायाचना का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें अनेक भाई-बहनों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। भरत कोठारी, रचना कोठारी, विनोद लुणिया, मुन्नी देवी कोठारी ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर साध्वी कारुण्यप्रभा जी ने कहा कि क्षमा वो खुशबू है जो एक फूल उन्हीं हाथों में छोड़ जाती है, जिन हाथों से उसे तोड़ा था। साध्वी प्रशमरति जी ने सबसे क्षमायाचना की। साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया।

✦ विद्या संस्थानों में लौकिक विद्या पढ़ाई जाती है। इसके साथ अलौकिक अर्थात् आत्मविद्या पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

क्या खोया क्या पाया

राजराजेश्वरी नगर।

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में तेममं के तत्त्वावधान में कन्या मंडल द्वारा टॉक शो का आयोजन किया गया। आजादी के ७५ साल बाद हमने क्या पाया और क्या खोया? जिसका विषय 'शिक्षा और रोजगार' सर्वप्रथम कन्या मंडल प्रभारी सुधा दुगड़ ने सभी का स्वागत किया। साध्वीश्री जी, महिला मंडल अध्यक्षा, सभा अध्यक्ष-मंत्री एवं तेयुप अध्यक्ष ने विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। कन्याओं ने उत्साहपूर्वक इसमें भाग लिया। दो ग्रुप बनाए गए, जिन्होंने आपस में डिबेट किया, कन्याओं के साथ-साथ उपस्थित श्रावक समाज ने भी इसमें भाग लिया।

साध्वीश्री जी ने कहा कि शिक्षा, संस्कार एवं रोजगार दोनों ही एक उत्तम जीवन के लिए आवश्यक हैं। महिला मंडल मंत्री ने विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। लगभग २३ कन्याओं ने इसमें भाग लिया। मुख्य भूमिका संयोजिका प्रेक्षा सुराणा, सह-संयोजिका आर्य संचेती ने निभाई, सभी सह-कन्याओं ने अपने विचार रखे। सह-प्रभारी पूनम दुगड़ ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

रूपांतरण एक्सप्रेस प्रतिक्रमण कार्यशाला

साहूकारपेट, चेन्नई।

तेरापंथ भवन में अभातेममं द्वारा निर्देशित एवं चेन्नई महिला मंडल द्वारा समायोजित 'रूपांतरण एक्सप्रेस' के अंतर्गत प्रतिक्रमण कार्यशाला में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि जब मैत्री भाव उत्पन्न हो जाता है, तब प्राणी निर्भय बन जाता है। क्षमापना की यात्रा से मानसिक प्रसन्नता-रूपी लक्ष्य की प्राप्ति होती है। हमारे शरीर में रोग-प्रतिरोधात्मक शक्ति होती है। यह सशक्त होती है तो नकारात्मक और अधैर्य, अक्षमा की भावना कम होती चली जाती है। समाधान की भावना पुष्ट होनी चाहिए। एक-दूसरे को क्षमादान देने से अव्यक्त आनंद की अनुभूति होती है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि क्षमा का अर्थ है–सहनशीलता का विकास। जिस परिवार, समाज में सहिष्णुता होती है वहाँ सतत आनंद का प्रवाह बहता है। पारस्परिक व्यवहार में ईर्ष्या की भावना न हो। संशय की चेतना न हो। जीवन में अभाव देखने की वृत्ति को स्थान न दें। हर व्यक्ति को करणीय और अकरणीय का विवेक रखना चाहिए।

कार्यक्रम का आरंभ महिला मंडल के प्रेरणा गीत से हुआ। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा पुष्पा देवी हिरण ने स्वागत स्वर पेश किए। धन्यवाद ज्ञापन सहमंत्री कंचन भंडारी ने दिया।

श्रीउत्सव मेले का आयोजन

कालांवाली।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा श्रीउत्सव मेले का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य लक्ष्य था महिला सशक्तिकरण, महिलाओं को स्वावलंबी बनाना और महिलाओं को व्यवसाय क्षेत्र में आगे बढ़ना। श्रीउत्सव मेले का उद्घाटन एसडीएम उदय सिंह द्वारा किया गया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि बहुत ही अच्छा लग रहा है यह देखकर कि हमारे क्षेत्र की महिलाएँ अब हर दिशा में आगे बढ़ रही हैं, और कामयाब भी हो रही हैं और साथ ही महिला मंडल, कालांवाली को महिला सशक्तिकरण के लिए श्रीउत्सव आयोजन की बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित की। उन्होंने आगे भी प्रशासन द्वारा हर प्रकार के सहयोग हेतु आश्वासन दिया।

कार्यक्रम का संचालन संरक्षिका एवं पूर्व अध्यक्षा देवा कीर्ति गर्ग ने किया। वहीं अध्यक्षा सीमा वर्मा ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया। मंत्री पुष्पा सिंगला ने बताया कि मेले में कुल १५ स्टॉल लगाई गई, जिसमें राधा-कृष्ण की ड्रेस, लाइव मेहँदी, पापड़, बड़ी एवं तेयुप कि गेमिंग एवं मेगा ब्लड डोनेशन कैंप की स्टॉल मुख्य आकर्षण का केंद्र रही।

हरियाणा तेरापंथी सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष दिनेश गर्ग एवं स्थानीय सभा अध्यक्ष हरीश सिंगला ने लक्की ड्रॉ के विजेताओं को सम्मानित किया। महिला मंडल द्वारा बच्चों एवं महिलाओं के लिए बहुत सारी छोटी-छोटी खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया एवं विजेताओं को सम्मानित किया गया। मेले का लगभग २००० लोगों ने आनंद लिया। महिला मंडल की संपूर्ण टीम का आयोजन में विशेष योगदान रहा।

वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

बालोतरा।

अखिल भारतीय तेरापंथ कन्या मंडल के तत्त्वावधान में तेममं के निर्देशन में कन्या मंडल द्वारा मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में वाद-विवाद प्रतियोगिता आजादी के ७५ वर्षों में क्या खोया और क्या पाया का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से की गई। कन्याओं द्वारा प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया गया। कार्यक्रम में निर्णायकगण रहे अभातेममं कार्यकारिणी सदस्य व मारवाड़ क्षेत्र प्रभारी सारिका बागरेचा और जयश्री बरड़िया। प्रतियोगिता का विषय था 'शिक्षा और रोजगार'।

प्रतियोगिता में कुल १३ कन्याओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता में विजेता रहे प्रथम स्थान दिव्या बाफना, तनिषा चोपड़ा, द्वितीय स्थान पर खुशी बाफना एवं तृतीय स्थान पर छवि वैद मेहता। निर्णायकगण और कन्या मंडल प्रभारी श्वेता सालेचा द्वारा भावों की अभिव्यक्ति दी गई। महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा द्वारा आभार ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम में ज्ञानशाला के प्रशिक्षक, बच्चे, बुजुर्ग महिलाएँ और लगभग ५० लोगों की उपस्थिति रही। कन्या मंडल सह-संयोजिका मनीषा ओस्तवाल ने भी प्रतियोगिता में सहभागिता दर्ज कराई। कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल संयोजिका साक्षी वैद मेहता द्वारा किया गया।

लिंग भेद वाद-विवाद प्रतियोगिता

कांटाबाजी।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में मुनि कुमुद कुमार जी के निर्देशन में कन्या मंडल द्वारा वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित हुई। मुनिश्री ने कहा कि जिंदगी में गाड़ी के दोनों पहिये बराबर हो तो गाड़ी सही ढंग से चलती रहती है। आपसी विचारों का तालमेल नहीं होने से टकराहट बढ़ती रहती है। एक-दूसरे की भावना का सम्मान करने से, सहयोग का भाव होने से घर की सुख-शांति एवं समृद्धि बढ़ती है। अच्छे संस्कार पनपते हैं।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में प्राचीन, मध्य और वर्तमान काल में स्त्रियों को सम्मान एंव उच्च स्थान मिलता रहा हैं अकेले पुरुष या अकेले स्त्री से समाज नहीं चलता है। दोनों एक-दूसरे के साथ समन्वय एवं सहयोग भाव के साथ रहें तो जीवन जीने का आनंद आता है।

के०वी० कॉलेज के प्रिंसिपल सत्यव्रत मिश्रा ने कहा कि समय के अनुसार सब कुछ बदलता है और बदलना सृष्टि का नियम है। परिवार से ही हमारे संस्कार बनते हैं। परिवार में बदलाव से समाज में बदलाव आता है।

ब्रजेश मित्तल ने कहा कि दोनों पहिये एक तत्त्व के नहीं हैं। शारीरिक संरचना की भिन्नता के अनुसार अंतर रहना स्वाभाविक है।

कन्या मंडल के मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। नम्रता ने विचार व्यक्त किए। समय पालक की भूमिका मुस्कान जैन ने पूर्ण की। आभार ज्योति जैन ने एवं कार्यक्रम का संचालन पूजा जैन ने किया। निर्णायकगण का सम्मान तेयुप अध्यक्ष अंकित जैन एवं महिला मंडल अध्यक्षा बॉबी जैन ने किया।

'जैन धर्मोस्तु मंगलम' कार्यक्रम का आयोजन

मुंबई।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं, मुंबई द्वारा तेरापंथ भवन, कांदिवली में साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में 'जैन धर्मस्तु मंगलम' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

तेममं की अध्यक्षा रचना हिरण ने सभी का स्वागत किया। महिला मंडल की राष्ट्रीय महामंत्री मधु देरासरिया ने विषय पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मदन तातेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए।

डॉ० मंजु नाहटा ने 'चित्रों में अनेकांतवाद' विषय पर व्याख्यान दिया। निर्मला नौलखा ने साध्वी निर्वाणश्री जी, साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी का परिचय दिया। उन्होंने साध्वीवृंद के जीवन पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात साध्वी योगक्षेमप्रभा जी ने 'पुनर्जन्म-कर्मवाद' को उदाहरण सहित समझाया। साध्वीश्री जी ने कहा कि जन्म और मृत्यु जितना सच है, पुनर्जन्म भी उतना ही सच। उन्होंने कई विद्वानों और वैज्ञानिकों का जिक्र किया, जिन्होंने इस बात को सिद्ध किया है।

अभातेममं की अध्यक्षा नीलम सेठिया ने वीडियो के माध्यम से जमीन के नीचे उगने वाली सब्जियों को न खाने की वजहों पर प्रकाश डाला। साध्वीवृंद ने गीतिका प्रस्तुत की।

सम्यक् दर्शन पर पुखराज सेठिया ने अपना उद्‍बोधन दिया। कनक ने कर्मवाद पर अपने विचार रखे। सभी वक्ताओं को महिला मंडल द्वारा स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि हम ज्ञान के साथ ही आचरण की पवित्रता को भी जोड़ें। साध्वीश्री जी ने महिलाओं के प्रगति की प्रशंसा की और कहा कि खुशी की बात है कि बहनें स्कोलर और विदूषी के रूप मे सामने आ रही हैं। साथ ही अभातेममं की महामंत्री, मुंबई महिला मंडल की अध्यक्षा रचना हिरण एवं इनकी पूरी टीम को शुभकामनाएँ दी।

आभार ज्ञापन अभातेममं की पूर्व महामंत्री तरुणा बोहरा ने व संचालन मंत्री अलका मेहता ने किया। कार्यक्रम में सांताक्रुज महिला मंडल संयोजिका ममता कोठारी, सह-संयोजिका डिंपल परमार, माया बाफना के साथ ही पूरी टीम ने प्रायोजक व संपूर्ण सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में उपाध्यक्ष विमला कोठारी, सहमंत्री सरोज सिंधवी, संगीता चपलोत, कोषाध्यक्ष सुनिता सुतरिया, ई-मीडिया प्रभारी सुचिता कोठारी व सभी पूर्वाध्यक्ष, मार्गदर्शक, परामर्शक, विशेष सहयोगी, कार्यकारिणी टीम का सहयोग रहा।

लगभग ६५० लोगों की उपस्थिति रही। यू-ट्यूब के माध्यम से ३००० से भी अधिक लोगों ने इस वेबिनार से लाभान्वित हुए।

दो दिवसीय अणुव्रत प्रबोधक कार्यशाला का आयोजन

गांधीनगर, बैंगलोर।

अणुविभा के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति, बैंगलोर द्वारा दो दिवसीय 'अणुव्रत प्रबोधक कार्यशाला' मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन गांधीनगर में हुआ।

प्रथम दिवस अणुव्रत आंदोलन में कार्यकर्ता का महत्त्व एवं द्वितीय दिवस वैश्विक परिदृश्य और अणुव्रत दर्शन की प्रासंगिता विषय पर पाथेय प्राप्त हुआ।

मुनि जयदीप कुमार जी ने आचार्यश्री तुलसी के अणुव्रत गीत द्वारा दिए संदेश का संगान किया एवं अणुव्रत द्वारा व्यक्ति को कैसे जीवन जीना चाहिए पर प्रकाश डाला। मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि देश-विदेश में प्रचार किया जाए व अणुव्रत को ग्रहण कर अणुव्रत से जीवन का विकास एवं आत्मा का कल्याण का मार्ग बनाया जाए।

मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि अणुव्रत प्रदर्शन नहीं, आत्मदर्शन का नाम है। अणुव्रत एक-दूसरे को जोड़ने का एक सेतु का काम करता है। अणुव्रत जाति संप्रदाय से ऊपर उठा हुआ है।

कार्यशाला में अणुविभा राष्ट्रीय अध्यक्ष संचय जैन, पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी टीम व अणुव्रत समिति, बैंगलुरू, अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल, सभा, तेयुप, ट्रस्ट, टीपीएफ, महिला मंडल की विशेष उपस्थिति रही। कार्यशाला के संयोजक हरकचंद ओस्तवाल एवं सह-संयोजक धर्मेन्द्र बरलोटा रहे।

✦ तात्त्विक ज्ञान देना, किसी को चित्तसमाधि पहुँचाना, यह भी सेवा का ही कार्य है।
– आचार्यश्री महाश्रमण

अष्टमाचार्य श्रीमद् कालूगणी का ८७वाँ स्वर्गवास दिवस

रोहिणी, दिल्ली।

साध्वी डॉ कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में अष्टमाचार्य श्रीमद् कालूगणी का ८७वाँ स्वर्गवास दिवस त्यागमय चेतना के द्वारा मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य कालूगणी एक ऐसे आचार्य थे, जिन्होंने धर्मसंघ में शिक्षा को विस्तार दिया। संस्कृत और प्राकृत भाषा का अत्यधिक महत्त्व बढ़ाया यही कारण है कि तेरापंथ संघ का अपना व्याकरण है 'भिक्षुशब्दानुशासनम्' आचार्य कालूगणी ऐसे प्रतिष्ठित आचार्य हैं, जिन्होंने दो-दो आचार्यों को संघ को सौंपा आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ।

साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा कि कालूगणी का कर्तृत्व, व्यक्तित्व और नेतृत्व तीनों ही विलक्षण थे। माँ को अपने आने की सूचना देने वाले इन महान महापुरुष का संपूर्ण जीवन प्रेरक है। जिस कोण से भी देखें, सभी तरफ वाणी की मधुरता, अध्यात्म का अमृतरस, समता का समंदर एवं उपशांत कषाय की शीतल निर्झरणी के रूप में निहारा जा सकता है। माँ के आँचल में पला यह बालक महान बनेगा, आचार्य बनेगा, यह उद्घोषणा तो पहले ही हो चुकी थी, इससे पता चला है कि बालक के पाँव पालने में ही पहचाने जा सकते हैं।

साध्वी सौभाग्यशा द्वारा मंगलाचरण किया गया। सभाध्यक्ष विजय जैन, महामंत्री राजेंद्र सिंघी, इंद्रा सुराणा, प्रवीण सिंघी, कुसुम खटेड़ आदि पदाधिकारी की सहभागिता भी रही।

ज्ञानशाला दिवस का कार्यक्रम

राउरकेला।

ज्ञानशाला दिवस उपासकगण की उपस्थिति में मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत उपासक ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से की। उसके बाद ज्ञानशाला गीत के द्वारा ज्ञानार्थी और प्रशिक्षिकाओं ने मंगलाचरण किया। बच्चों के द्वारा प्रस्तुतियाँ दीं। प्रशिक्षिकाओं द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई। सभी प्रशिक्षिकाओं ने बच्चों को एक सुनियोजित एवं व्यवस्थित तरीके से प्रस्तुति के लिए तैयार किया। बच्चों ने एल्फाबेट के माध्यम से जैन धर्म के नए-नए शब्द बताए।

प्रवक्ता उपासक पवन सेठिया ने बताया कि आचार्यश्री तुलसी की तीन प्रिय देन हैं—ज्ञानशाला, जैन विद्या और उपासक श्रेणी। उपासक आदित्य कोठारी ने बच्चों की प्रस्तुति की सराहना की। ज्ञानशाला के पूर्व आंचलिक संयोजक रूपचंद बोथरा, सभा के अध्यक्ष छगनलाल जैन, सभा के पूर्व अध्यक्ष मांगीलाल बोथरा, महिला मंडल की अध्यक्षा सरोज गोलछा, तेयुप अध्यक्ष हितेश बोथरा ने अपने विचार व्यक्त किए।

ज्ञानशाला की स्थानीय संयोजिका कनक बोथरा ने बच्चों का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम का संयोजन ज्ञानशाला के पूर्व ज्ञानार्थी हर्षिता डागा ने किया और आभार ज्ञापन प्रशिक्षिका संपत भंसाली ने किया। इस अवसर पर सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों सहित श्रावक समाज की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अंत में सभा द्वारा ज्ञानार्थी और प्रशिक्षिका को सम्मानित किया गया।

भिक्षु भजन संध्या सह-एकल गायन प्रतियोगिता का आयोजन

अररिया कोर्ट।

तेयुप द्वारा महामना भिक्षु के २२०वें भिक्षु चरमोत्सव एवं भादूड़ी तेरस के उपलक्ष्य में भजन संध्या सह-एकल गायन प्रतियोगिता का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में १७ एकल गायन की प्रस्तुति हुई। निर्णायकों द्वारा दिए गए निर्णय में कविता बोथरा को प्रथम, विनय दुगड़ द्वितीय एवं सुनील हिरावत और विनीत दुगड़ को तृतीय स्थान प्राप्त किया। तेयुप के द्वारा विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेयुप की सक्रियता रही। कार्यक्रम का संचालन मनीष बैगवानी ने किया।

✦ इंद्रिय संयम की साधना श्रेयस्कर होती है। सर्वेन्द्रिय संयम मुद्रा का प्रयोग इंद्रिय संयम की साधना में सहायक बन सकता है।

– आचार्यश्री महाश्रमण

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✻ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✻ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✻ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✻ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✻ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✻ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✻ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✻ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✻ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✻ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✻ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✻ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

श्रीडूंगरगढ़।

तेयुप द्वारा जैन संस्कार विधि से नूतन प्रतिष्ठान का उद्‌घाटन का कार्यक्रम मोहित सुरेश कुमार बोरड़ के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से करवाया।

कार्यक्रम का संचालन संस्कारक चमन श्रीमाल ने नमस्कार महामंत्र से किया। कार्यक्रम में तेयुप, श्रीडूंगरगढ़ के सदस्य उपस्थित रहे।

पर्वत पाटिया।

सूरजमल पुगलिया के अनुज पुत्र राजेश पुगलिया के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संपादित किया।

संस्कारक रवि मालू और पवन बुच्चा ने मंगलमंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम संपन्न करवाया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य सदस्य उपस्थित थे। तेयुप की ओर से मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया। परिवार से प्रदीप ने पधारे हुए संस्कारकगण एवं तेयुप के प्रति आभार ज्ञापित किया।

नूतन गृह प्रवेश

अहमदाबाद।

अशोक कुमार-मनीष कुमार डागा के नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि से करवाया गया। संस्कारक आनंद बोथरा, वैभव कोठारी ने नमस्कार महामंत्र के मंगल मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम संपादित किया।

परिषद की ओर से मंगलभावना पत्रक की भेंट दी गई। परिवार की ओर से शोभा देवी डागा ने तेयुप एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर तेयुप मंत्री दिलीप भंसाली उपस्थिति रहे। कार्यक्रम का संचालन संस्कारक आनंद बोथरा ने किया।

नामकरण संस्कार

जयपुर।

प्रिया-अभिषेक डोसी की सुपुत्री एवं कुसुम-करण सिंघी की दोहिती का नामकरण संस्कार उनके आवास पर संस्कारक श्रेयांस बैंगानी ने विधि-विधानपूर्वक जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया।

तेयुप से जैन संस्कार विधि के संयोजक बिनीत सुराणा सहित समाज के अन्य गणमान्य महानुभाव की उपस्थिति में परिषद परिवार की ओर से मंगलभावना पत्र भेंट किया गया।

माँ के चरणों में पूरे ब्रह्मांड की शक्ति विद्यमान

बालोतरा।

मुनि मोहजीत कुमार जी ने 'माँ' विषय पर अमृत सभागार में कहा कि माँ के चरणों में पूरे ब्रह्मांड की शक्ति विद्यमान है। उनके पैरों के नीचे की मिट्टी स्वर्ग की मिट्टी के समान है। माँ एक पूर्ण शब्द है, अकट्य ग्रंथ है, ममता का महाकाव्य है। माँ ममता की मूरत है, समता की सूरत है, त्याग की प्रतिमूर्ति है। आकाश का कोई ओर-छोर नहीं है, वैसे ही माँ की महिमा का अंत नहीं है, वह अपार है, अमाप्य है। माँ एक विश्वविद्यालय है। विश्व के सभी ग्रंथ और धर्म में माँ की महिमा गाई गई है।

मुनि भव्य कुमार जी ने इस अवसर पर कहा कि इंसान अपनी पूरी जिंदगी में अपनी माँ के लिए कुछ भी कर ले तो भी उसका कर्ज चुकाया नहीं जा सकता। इस अवसर पर मुनि जयेश कुमार जी ने बताया कि जब माँ अपने बच्चों को अपने हाथ से खाना खिलाती है तब स्वयं का मुँह भी खोल लेती है। बच्चे की भूख को शांत करते समय स्वयं भी उसे देखकर तृप्त हो जाती है। माँ दया, करुणा, संयम, सहनशीलता, क्षमा और विनम्रता की धनी होती है।

इस अवसर पर तेरापंथ महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विजयराज गांधी मेहता, पंच मंडल सदस्य दिलीप सिंघवी, जोधपुर संभाग प्रभारी गौतमचंद सालेचा, कार्यसमिति सदस्य धनराज ओस्तवाल और बाहुबली भंसाली, तेरापंथ सभा, महिला मंडल और तेयुप पदाधिकारी के साथ तेरापंथ श्रावक समाज उपस्थित हुआ।

✦ जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मशोधन का अलौकिक पर्व है - पर्युषण महापर्व

सुनाम।

पर्युषण पर्वाधिराज का प्रथम दिवस खाद्य संयम दिवस विषय पर उग्र बिहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि संसार में समय-समय पर कई प्रकार के पर्व मनाए जाते हैं। पर्व मनाने का अर्थ होता है–संस्कृति और संस्कारों की सुरक्षा करना। जैनधर्म में भी कई पर्व मनाए जाते हैं, परंतु महापर्व के नाम से तो पर्वाधिराज पर्व पर्युषण ही मनाया जाता है। खाद्य संयम दिवस पर मुनिश्री ने कहा कि संसारी प्राणी भोजन-पानी बिना नहीं रह सकते, परंतु व्यक्ति में खाद्य और अखाद्य का विवेक होना चाहिए और अखाद्य पदार्थों का वर्जन किए बिना स्वास्थ्य स्वस्थ नहीं रहता और स्वस्थ व्यक्ति आत्म साधना तो दूर अपनी आजीविका भी सही ढंग से नहीं चल पाती।

स्वाध्याय दिवस पर मुनिश्री ने कहा कि स्वाध्याय हमारी एकाग्रता को बढ़ाने वाला और ज्ञान वृद्धि का सक्षम सबल उपाय है–स्वाध्याय के बिना प्राप्त ज्ञान को सुरक्षित रखना और जीवन विकास के सूत्रों की प्राप्ति अति कठिन है। स्वाध्याय को निर्जरा के १२ भेदों में आभ्यंतर तप माना गया है। स्वाध्याय के द्वारा आत्मा को निर्मल बनाया जा सकता है।

सामायिक दिवस पर अभिनव सामायिक कार्यक्रम में मुनिश्री ने कहा कि जैन समाज में सामायिक का बड़ा महत्त्व है, चाहे दिगंबर हो या श्वेतांबर अपनी-अपनी विधि से सब सामायिक करते हैं, सामायिक एक तप है–सुरक्षा कवच है। श्रावक का नवमा व्रत है सामायिक। अगर अभिनव सामायिक का नियमित क्रम बनाया जाए तो ज्ञान वृद्धि का क्रम भी व्यवस्थित बन सकता है यह परम पूज्य गुरुदेव तुलसी का अनुपम आयाम है।

वाणी संयम दिवस पर कहा कि इस कलिकाल में तीर्थंकर तो नहीं हैं परंतु तीर्थंकरों की वाणी हमारे विकास में साधक बनती है। भगवान ने समिति गुप्तियों की उत्तम प्रेरणा देकर प्राणी मात्र के कल्याण का पथ प्रशस्त कर दिया है। व्यक्ति अगर वचन गुप्ति और भाषा समिति का सही उपयोग करे तो आत्मस्थ बनकर परिवार, समाज को भी स्वस्थ बना सकता है।

अणुव्रत दिवस पर मुनिश्री ने कहा कि भगवान महावीर ने दो प्रकार के धर्म की व्याख्या की है–अणुव्रत और महाव्रत अणुव्रतों का पालन करने वाले श्रावक-श्राविकाएँ कहलाते हैं। महाव्रतों का पालन करने वाले साधु-साध्वी कहलाते हैं। मुनिश्री ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने इसे छोटी माला और बड़ी माला की उपमा दी। माला तो आखिर माला है चाहे छोटी हो या बड़ी कैसे भी क्यों ना हो उसे भी रत्नों की माला बताया है। हम अणुव्रतों को छोटा न समझें। अणुव्रतों का भी शुद्ध पालन करके श्रावक नर्क और तिर्यंच गति से निवृत्त हो सकता है। मुनिश्री ने विस्तार से १२ व्रतों की व्याख्या की।

जप दिवस पर मुनिश्री ने बताया कि प्रत्येक मंत्र अपने आपमें शक्तिशाली होता है, परंतु उसका जप विधिपूर्वक समयबद्ध किया जाए। मुनिश्री ने जयाचार्य युग की आचार्यश्री तुलसी युग की कई घटनाओं का वर्णन करके लोगों को जप की विशेष प्रेरणा दी।

ध्यान दिवस पर मुनिश्री ने कहा कि ध्यान धर्म का प्राणतत्त्व है, जितने भी तीर्थंकर हुए हैं उन्होंने ध्यान के द्वारा ही केवल ज्ञान को प्राप्त किया था। हमें ध्यान का अभ्यास बढ़ाना चाहिए, जिससे हम युगीन समस्या का समुचित समाधान कर सकें। हमारी प्रेक्षाध्यान पद्धति कितनी सरल और सहज है, हमें इसको गहराई से समझकर औरों को भी समझाने का प्रयास करना चाहिए।

संवत्सरी महापर्व पर मुनि कमल कुमार जी ने कार्यक्रम का प्रारंभ करते हुए कहा कि जैन समाज का सबसे बड़ा पर्व संवतसरी पर्व है, यह पर्व आध्यात्मिक पर्व है। अंतर दर्शन का पर्व है, आत्मशोधन का पर्व है। कार्यक्रम के प्रारंभ में मुनि नमि कुमार जी ने मेघ कुमार जी का वृत्तांत सुनाते हुए सबको सहिष्णु बनने की प्रेरणा दी। मुनि कमल कुमार जी ने संवत्सरी पर्व पर गीत का संगान किया।

साधु-साध्वियों के जीवन-वृत्त का विस्तार से वर्णन किया। कार्यक्रम में पातड़ा, बुढलाड़ा, लोंगोवाल शेरों के भाई-बहनों ने भाग लेकर महापर्व की आराधना में सामायिक पौषध यथा अनुकूल किए। कार्यक्रम के अंत में मुनि अमन कुमार जी ने गज सुकुमाल मुनि का वृत्तांत सुनाया। अखंड जप नमस्कार महामंत्र का चला। सायं सामूहिक प्रतिक्रमण का क्रम व्यवस्थित रहा। प्रतिक्रमण के पश्चात पंजाब प्रांतीय सभा के अध्यक्ष केवल कृष्ण गोयल सभा के अध्यक्ष रामस्वरूप जैन, तेयुप के अध्यक्ष सुमित जैन, महिला मंडल की अध्यक्षा पुष्पा जैन ने सभी से क्षमायाचना की।

क्षमायाचना के अवसर पर सबसे पहले मुनित्रय ने गुरुदेव को करते हुए गुरुदेव, मुख्य मुनि महावीर कुमार जी, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी, साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी सहित समस्त साधु-साध्वियों से निर्धारित शब्दावली के उच्चारण करते हुए क्षमायाचना की। तत्पश्चात मुनि कमल कुमार जी ने अपने सहयोगी मुनि अमन कुमार जी, मुनि नमि कुमार जी से क्षमायाचना की। तत्पश्चात समस्त पंजाब में विराजित साधु-साध्वियों से क्षमायाचना करते हुए समस्त श्रावक-श्राविकाओं से क्षमायाचना की।

चित्त समाधि कार्यशाला का आयोजन

माणसा।

साध्वी सोमयशा जी के सान्निध्य में माणसा में 'चित्त समाधि कार्यशाला' का आयोजन किया गया, जिसमें काफी भाई-बहनों ने उत्साह से भाग लिया। साध्वी सोमयशा जी ने कहा कि आज हर व्यक्ति समाधिस्थ होना चाहता है, चित्त समाधि चाहता है। साध्वीश्री ने चित्त समाधि के लिए सभ को कुछ टिप्स भी बताए।

साध्वी डॉ० सरलयशा जी ने बताया कि कैसे हम चित्त समाधि प्राप्त कर सकते हैं, कैसे हम समय का सम्यक् नियोजन कर सकते हैं और कैसे हम अपनी क्षमताओं का सही उपयोग कर सकते हैं।

साध्वी ऋषिप्रभा जी ने चित्त समाधि की सफलता के तरीके बताते हुए कहा कि चित्त समाधि की सफलता के लिए हमें सहनशीलता का विकास करना चाहिए। हम सहनशील बनें, सहिष्णु बनें तो चित्त समाधि में हमें सफलता अवश्य मिल सकती है।

महिला मंडल ने सामूहिक रूप में निवि तप का आयोजन किया, जिसमें काफी अच्छी संख्या में भाई-बहनों ने भाग लेकर कर्म निर्जरा का लाभ लिया।

प्रेक्षाध्यान व जीवन-विज्ञान शिविर का आयोजन

सवाई माधोपुर।

अणुव्रत भवन में मुनि सुमति कुमार जी के सान्निध्य में त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान व जीवन-विज्ञान शिविर का आयोजन किया गया। जयपुर से समागत प्रशिक्षिका विजया छल्लानी ने शिविर में ध्यान, प्राणायाम, यौगिक क्रियाओं व जीवन निर्माण से संबंधित विभिन्न प्रायोगिक आयामों की जानकारी दी। लगभग ७० शिविरार्थियों ने तीन दिवस में आयोजित ११ सत्रों में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

शिविरार्थियों को मुनि सुमति कुमार जी, मुनि देवार्यकुमार जी व मुनि राहुल कमार जी ने अभिप्रेरित किया। विजयराज छल्लानी का भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। समापन के अवसर पर शिविरार्थियों ने इस आयोजन की भरपूर सराहना की व आयोजनकर्ता श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, तेममं व तेयुप, आदर्शनगर का आभार ज्ञापित किया।

पर्युषण पर्व का आयोजन

विशाखापट्टनम्।

मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में उल्लासपूर्ण वातावरण में पर्युषण पर्व का आयोजन तेरापंथी सभा विशाखापट्टनम् द्वारा किया गया। आठों ही दिन मुनि दीप कुमार जी के प्रवचन भगवान महावीर की आध्यात्मिक यात्रा और निर्धारित विषयों पर हुए।

मुनिश्री का प्रवचन सुन उपस्थित जनता मंत्रमुग्ध बन जाती। संवत्सरी के दिन मुनिश्री का लगभग साढ़े छः घंटे प्रवचन हुआ। बाल मुनि काव्य कुमार जी के निर्धारित विषयों पर गीत और वक्तव्य हुए।

पर्युषण के ७ दिन अखंड नवकार मंत्र का जप चला। सायं सामूहिक प्रतिक्रमण हुआ। पर्युषण में अच्छी संख्या में तेले, अठाई, नौ आदि तपस्याएँ हुई। संवत्सरी पर अष्ट प्रहरी, छः प्रहरी, चार प्रहरी, करीब ७० पौषध हुए। क्षमापना कार्यक्रम के साथ पर्युषण पर्व परिसंपन्न हुआ। पर्युषण के आठों दिन तेरापंथ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण हुआ।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का आयोजन

हावड़ा।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का सात दिवसीय कार्यक्रम अणुव्रत विश्व भारती द्वारा निर्देशित साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में सानंद संपन्न हुआ। जिसमें सभी दिन अलग-अलग वक्ताओं ने अपना वक्तव्य रखा।

तरुण सेठिया का वक्तव्य रहा। प्रेमलता चोरड़िया का जीवन-विज्ञान का कार्यक्रम स्कूल में रखा गया, जिसमें लगभग २०० विद्यार्थियों/अध्यापकों ने भाग लिया। प्रोजेक्टर के द्वारा विद्यार्थियों को वीडियो के माध्यम से दिखाया गया कि जीवन-विज्ञान हमारे लिए कितना महत्त्व का विषय है।

संपत बरमेचा, संजय पारख, प्रताप दुगड़, प्रकाश सुराणा एवं रतन दुगड़ द्वारा अलग-अलग विषयों पर वक्तव्य रहा।

साध्वी स्वर्णरेखा जी ने मंगल उद्‌बोधन में समाज को अणुव्रत अपनाने और उसे जीने की प्रेरणा दी। आचार्य तुलसी ने पूरे भारत में अणुव्रत यात्रा और नैतिकता, सद्भावना, नशामुक्ति का प्रचार-प्रसार किया।

अणुव्रत समिति, हावड़ा के सभी पदाधिकारियों ने अपने समय का योगदान दिया और कार्यक्रम को सफल बनाया। सातों दिन कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति, हावड़ा की उपाध्यक्ष सुषमा सिंघी ने किया तथा २ अक्टूबर को अणुव्रत विश्व भारती के उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़ ने किया।

त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

अमराईवाड़ी-ओढ़व।

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन सिंधवी भवन में किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि संसार में अनेक साधना पद्धतियाँ प्रचलित हैं, उनमें एक है–प्रेक्षाध्यान। प्रेक्षा का अर्थ है देखना, जानना चेतना का लक्षण है। आवृत्त चेतना में जानने और देखने की क्षमता क्षीण हो जाती है। उस क्षमता को विकसित करने का सूत्र है–जानो-देखो। शरीर में तीन प्रकार की वेदना होती है–आधि, व्याधि और उपाधि। इन तीनों को मिटाने का उपाय है–प्रेक्षाध्यान।

प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षक लाजपतराय जैन ने कहा कि आत्मा की गहराई में उतरने का नाम है–प्रेक्षाध्यान। प्रेक्षाध्यान में प्रयोग आने वाली विभिन्न मुद्राओं के लाभ और प्रयोग के बारे में जानकारी दी। श्वास सम्यक् कैसे हो? श्वास कैसे ली जाती है? आदि विषयों पर प्रकाश डालते हुए प्रेक्षाध्यान के कुछ प्रयोग करवाए।

हमें भोजन कैसे लेना चाहिए, कौन-सा भोजन लेना चाहिए, कब, कितना, किस तरह भोजन लेना चाहिए इस पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। बहुत-सी यौगिक क्रियाएँ भी करवाई। कार्यक्रम को सफल बनाने में दिनेश चंडालिया का विशेष श्रम रहा। तेयुप, तेमम की उपस्थिति सराहनीय रही।

✦ जिसकी जैसी भावना होती है, वैसे ही कर्मों का बंध हो जाता है और परिणामस्वरूप वैसा ही फल भोगना पड़ता है।

– आचार्यश्री महाश्रमण

भिक्षु चरमोत्सव के विविध आयोजन

फरीदाबाद

साध्वी शुभप्रभा जी के सान्निध्य में 'भिक्षु चरमोत्सव' का कार्यक्रम आयोजित किया गया। 'ॐ भिक्षु का सामूहिक जप के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। साध्वीश्री जी ने कहा कि श्रीमद् जयाचार्य ने तीन महोत्सव दिए, जिसमें एक चरमोत्सव भी है। जब भी स्वामीजी का नाम जुबाँ पर आता है, श्रद्धा से मस्तक झुक जाता है। वे पुरुषार्थी थे, वे परम साधक थे, वे निष्प्रकंप थे, अभीत थे। परम साधक वह होता है जो संघर्षों की आग को हँसते-हँसते झेलता है तथा सत्य के साँचे में ढलना जानता है।

आचार्य भिक्षु जब वैरागी बने, दीक्षा भावना जागी तब वे अनेक साधुओं से मिले, चर्चा की। वहाँ की क्रियाएँ सूक्ष्मता से देखीं। आचार-व्यवहार को परखा। तत्पश्चात आचार्यश्री रघुनाथ के पास दीक्षित हुए। उनके पास श्रुताराधना व आत्माराधना करते रहे।

साध्वी कांतयशा जी ने गीत का संगान किया। साध्वी अनन्यप्रभा जी ने विचार प्रस्तुत किए। पद्मा गोलछा ने गीत का संगान किया।

रात्रि में 'आज की शाम भिक्षु के नाम' धम्म जागरण का क्रम चला, जिसमें अनेक जनों ने उपस्थिति दर्ज कराई। साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया।

भीलवाड़ा

तेरापंथ भवन, नागौरी गार्डन में आचार्य भिक्षु का २२०वाँ चरमोत्सव साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। इस अवसर पर साध्वी परमयशा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का जीवन विशिष्टताओं का समवाय है। उनकी आचार-विचार, निष्ठा बेजोड़ थी। छोटी-सी खामी भी उन्हें बर्दाश्त नहीं होती थी। आचार्य भिक्षु शांति, धृति और शक्ति के साथ भक्ति पथ की क्रांति करने वाले विरले व्यक्तित्व थे। उन्होंने अच्छा साधुपन पाला, आकांक्षा इच्छाओं से परे अंतिम समय में निर्लिप्तजीवी जीते हुए संथारा संलेखना से अपना मृत्यु का वरण करते हुए जीवन का उपसंहार किया।

तेममं के मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने आचार्य भिक्षु के बारे में कहा कि उनका जीवन ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी रहा। गुणों का अक्षय भंडार थे भिक्षु, उपशांत कषाय वाला जीवन जीकर उन्होंने वो सबके अनुकरणीय बन गए। तेममं अध्यक्षा मीना बाबेल, लक्ष्मीलाल झाबक, टीपीएफ अध्यक्ष राकेश सुतरिया, उपासक सुरेश बोरदिया, मुकेश रांका, सुरेश चोरड़िया, साध्वी कुमुदप्रभा जी के पिता कमल दुगड़, कमला देवी सिरोहिया, ममता बोथरा, प्रेम देवी नौलखा, मैना कांठेड़, विमला रांका, नीलम लोढ़ा—इन सभी ने गीतिकाओं एवं वक्तव्य द्वारा तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रणेता भिक्षु स्वामी को श्रद्धांजलि समर्पित की।

मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि तेममं की बहनों ने भिक्षु चरमोत्सव पर अपनी रोचक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति अध्यक्ष आनंद बाला टोडरवाल ने किया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री योगेश चोरड़िया ने किया।

मैसूर

आचार्यश्री भिक्षु का २२०वाँ चरमोत्सव तेरापंथ भवन में सभा द्वारा आयोजित किया गया। शुभारंभ भिक्षु मंडली के मंगलाचरण द्वारा किया गया। सभाध्यक्ष प्रकाश दक ने उपस्थित सभी संस्था के पदाधिकारियों एवं श्रद्धालुओं का स्वागत किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि मैसूर के प्रथम नागरिक सेवाभावी मैसूर मेयर शिवकुमार उपस्थित रहे। अपने वक्तव्य में तेरापंथ समाज की प्रशंसा करते हुए कहा कि संघ सेवा एवं संघ में कोई भी कार्य हो आप हमेशा तत्पर हैं। इस अवसर पर मुख्य अतिथि का सम्मान मेवाड़ी पगड़ी, जैन दुपट्टा, साहित्य द्वारा किया गया।

विमल पितलिया का विशेष सहयोग रहा। मैसूर महिला मंडल अध्यक्षा मंजु दक, तेयुप अध्यक्ष विकास गांधी मेहता, अणुविभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष महेंद्र नाहर, महासभा सदस्य महावीर देरासरिया, अभातेयुप सदस्य मुकेश गुगलिया, तेयुप मंत्री प्रमोद मुणोत, महिला मंडल मंत्री वनीता बाफना आदि अनेक गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति रही। संचालन सुरेश पितलिया द्वारा किया गया तथा धन्यवाद, आभार ज्ञापन मंत्री महावीर मारू द्वारा किया गया।

टी-दासरहल्ली

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ प्रवर्तक आचार्य भिक्षु का २२०वाँ चरमोत्सव दिवस समारोह साध्वीवृंद द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार द्वारा प्रारंभ हुआ। शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि जैनागमों के महान, गहन, मर्मज्ञ एवं व्याख्याता थे आचार्य भिक्षु। उनकी सूक्ष्मग्राही मनीषा ने अनुस्रोतगामी बनना नहीं चाहा।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु दिव्य संकेतों के साथ जन्मे। जब वे माँ दीपा के गर्भ में आए तब माँ दीपा ने सिंह का स्वप्न देखा। वह चरितार्थ हुआ। उन्होंने जैन समाज के सम्मुख महावीर वाणी को जैनागमों के प्रमाण के साथ निर्भीकता के साथ रखा।

साध्वी मंजुरेखा जी, साध्वी निर्भयप्रभा जी, साध्वी चेलनाश्री जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल व तेयुप द्वारा सुमधुर गीत से आचार्य भिक्षु चरण में अभिवंदना की गई। तेमम उपाध्यक्ष नेहा चावत ने सभी का स्वागत किया। दिल्ली से समागत विजयराज सुराणा ने स्वयं से संपादित 'दिल्ली में तेरापंथ का विकास' पुस्तक साध्वीवृंद के चरणों में भेंट की। आभार ज्ञापन पूर्णिमा कटोतिया ने किया। समारोह का संचालन तेरापंथ सभा के मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया।

जसोल

आचार्यश्री भिक्षु का २२०वाँ चरमोत्सव दिवस शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में पुराना ओसवाल भवन में मनाया गया।

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने कहा कि शिथिलाचार के विरुद्ध साहसिक कदम है—तेरापंथ। सत्य की आराधना के लिए सुख, सम्मान और सुविधाओं के बलिदान की कहानी है यह तेरापंथ। आचार्यश्री भिक्षु की कहानी को जब आज भी सुनते हैं, सुनाते हैं रोम-रोम फड़क उठता है। कितनी बाधाएँ आई, पर नहीं तनिक विचलित हुए। दृढ़ निश्चय से बढ़े चले वे, सिद्धांतों पर अडिग रहे। साध्वी ध्यानप्रभाजी, साध्वी श्रुतप्रभाजी, साध्वी यशस्वीप्रभा जी ने आचार्य भिक्षु पर कविता, मुक्तक, कहानी और प्रेरणा पाथेय प्रदान किया।

इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण विमला देवी वोहरा द्वारा गीतिका से हुआ। स्वागत गीतिका चाँदनी वडेरा ने प्रस्तुत की। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सामूहिक गीतिका का संगान किया गया। कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष उषभराज तातेड़, शंकरलाल ढेलड़िया, संपतराज चोपड़ा, माणकचंद संखलेचा, सुरेश डोसी, कांतिलाल ढेलड़िया, उपासिका मोहिनी देवी संखलेचा सहित प्रबुद्ध वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री कांतिलाल ढेलड़िया ने किया।

दक्षिण मुंबई

शासनश्री साध्वी सोमलता जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु के २२०वें महाप्रयाण दिवस पर संपर्ण श्रद्धालु श्रावक-श्राविका समाज ने संकल्प सुमनों से, तप से श्रद्धांजलि अर्पित की। मंगलाचरण राजुदेवी सुखानी और शारदादेवी सेठिया ने किया। ज्ञानशाला के बच्चों ने परिसंवाद किया। नवयुवती मंडल ने कव्वाली की प्रस्तुति दी।

साध्वी सोमलता जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु मतिशाली थे, धृतिशाली थे, उनका बुद्धिबल प्रबल था। उनकी प्रज्ञा जागृत थी। उनका धैर्य अड़ोल था। वे किसी भी परिस्थिति में प्रकंपित नहीं, बल्कि उनके चरण निरंतर सत्य को पाने के लिए आगे बढ़ते रहे। आपने आगे कहा कि आचार्य भिक्षु कोई नया संप्रदाय बनाना नहीं चाहते थे। आत्मशुद्धि की विशद भावना ने उनको प्रेरित किया और उन्होंने एक नया मार्ग चुना और वह राजपथ बन गया। वह राजपथ है—तेरापंथ।

साध्वी शकुंतला कुमारी जी व साध्वी रक्षितयशा जी ने मधुर गीत का संगान किया। साध्वी जागृतप्रभा जी ने कविता पाठ किया। साध्वी संचितयशा जी ने अपने विचार प्रस्तुत किए। पुष्पेंद्र, सुमन कावड़िया, मनोज धनराज भंसाली, मनोज झाबक, रेखा बरलोटा, भावना धाकड़ ने अपने विचार रखे।

महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन के अध्यक्ष किशनलाल डागलिया, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष गणपतलाल डागलिया, तेयुप के अध्यक्ष नितेश धाकड़, तेयुप के मंत्री रौनक धाकड़, महिला मंडल की संयोजिका प्रीति डागलिया आदि उपस्थित थे।

वसई (मुंबई)

साध्वी प्रज्ञाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ के प्रांगण में आचार्यश्री भिक्षु स्वामी का २२०वाँ चरमोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र एवं नालासोपारा महिला मंडल के मंगलाचरण द्वारा हुई। साध्वी विनयप्रभा जी व साध्वी प्रतीकप्रभा जी द्वारा गीतिका प्रस्तुत की गई।

साध्वी सरलप्रभा जी ने स्वामी जी के जीवन के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। साध्वी प्रज्ञाश्री जी ने कहा कि स्वामीजी का जीवन एक पुस्तक के समान था, जो पुस्तक सत्य की प्रतीक थी, जो नदी के समान एक जैसा जीवन जिया, समुंद्र की तरह गहरा था। स्वामी जी अपना काम स्वयं करते थे। हमेशा धर्मसंघ की साधना करते रहे, साध्वीश्री जी ने विस्तारपूर्वक बताया।

सभा अध्यक्ष प्रकाश संचेती, मोहनलाल गुंदेचा, नालासोपारा से सभा अध्यक्ष लक्ष्मीलाल मेहता, उपाध्यक्ष रमेश ढालावत, मंजु संचेती, निशा डांगी, करुणा कोठारी, दिव्या मेहता, वनिता सोलंकी, लक्ष्मी मेहता, मीना ढालावत, सभा, महिला मंडल, तेयुप, कन्या मंडल, किशोर मंडल व पूरे समाज की उपस्थिति रही। संचालन सुनीता हिरण ने किया।

चंडीगढ़

आचार्य भिक्षु श्रमण परंपरा के महान संवाहक थे। आचार्य भिक्षु जब तक जिए, ज्योति बनकर जिए। उनके जीवन का हर पृष्ठ पुरुषार्थ की गौरवमयी गाथाओं से भरा पड़ा है। आचार्य भिक्षु सत्य के लिए प्राण न्यौछावर करने के लिए तत्पर थे। वे महान आत्मबली थे। जीवन में शुद्ध साधुता को प्रतिष्ठित करना चाहते थे। ये शब्द मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने अणुव्रत भवन, तुलसी सभागार में आचार्य भिक्षु के २२०वें चरम कल्याणक दिवस पर व्यक्त किए।

मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने अपने मौलिक चिंतन के आधार पर नए मूल्यों की स्थापना की। हिंसा व दान-दया संबंधी उनकी व्याख्या सर्वथा वैज्ञानिक कही जा सकती है। आचार्य भिक्षु की अहिंसा सार्वभौतिक क्षमता पर आधारित थी।

मुनि विनय कुमार जी ने आगे कहा कि आचार्य भिक्षु ने जैन समाज में प्रचलित मान्यता के समक्ष नया चिंतन प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि रक्त से सना वस्त्र कभी रक्त से शुद्ध नहीं होता। वैसे ही हिंसा प्रधान प्रवृत्ति कभी अध्यात्म के पावन लक्ष्य तक नहीं पहुँचा सकती। आचार्य भिक्षु के साहित्य को पढ़कर आधुनिक विद्वान् उन्हें हिगल और काण्ट की तुला से तोलते हैं।

चेन्नई

मुनि सुधाकर कुमार जी, मुनि नरेश कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप के तत्त्वावधान में भिक्षु स्मृति साधना का आयोजन हुआ।

इस अनुष्ठान में लगभग ११६ भाई-बहनों ने भाग लिया। आचार्य भिक्षु एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने दुनिया को शुद्ध धर्म का प्रकाश दिया। वे सत्य के पुजारी थे। सत्य की प्राप्ति ही उनका चरमलक्ष्य था। अनेक विरोधी तूफानों को हँसते-हँसते झेला। आने वाली हर मुसीबत को गले लगाया। साध्वीश्री जी एवं मुनिश्री ने कहा कि तेयुप, चेन्नई हर वर्ष भिक्षु स्मृति साधना का आयोजन करती है, जिसमें १३ नियमों के साथ भाई-बहन 'ॐ भिक्षु' सवा लाख का जाप करते हैं। तेयुप का अच्छा उपक्रम है।

तेयुप अध्यक्ष विकास कोठारी ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

तेयुप की तरफ से सभी संभागियों का सम्मान अध्यक्ष विकास कोठारी, मंत्री संदीप मूथा, सभा अध्यक्ष उगमराज सांड एवं प्रायोजक संतोष कुमार, मुकेश, ललित, कमलेश रांका परिवार ने किया। कार्यक्रम का संचालन हरीश भंडारी ने किया।

स्टेशनरी एवं खाद्य सामग्री वितरण

अमराईवाड़ी।

अभातेमम के निर्देशन में तेमम द्वारा समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत महिला मंडल एवं कन्या मंडल की बहनों सरकारी आंगनवाड़ी स्कूल, रतनपुरा में पहुँची। आंगनवाड़ी की शिक्षिका ने सभी बहनों का स्वागत किया।

अध्यक्ष संगीता सिंघवी ने बच्चों को संस्कार ज्ञान दिया। मंत्री लक्ष्मी सिसोरिया ने बच्चों को स्टोरी के माध्यम से प्रेरणा दी। कन्या मंडल प्रभारी रितिका गेलड़ा एवं कोमल हिरण ने बच्चों को गेम खिलाए।

बच्चों को उपहार स्वरूप स्टेशनरी एवं खाद्य सामग्री वितरित की गई। कार्यक्रम में कन्या मंडल से दीक्षा चौरड़िया एवं रिंकू सिंधवी ने सहयोग दिया। कार्यक्रम के प्रायोजक मंजु, जितेंद्र, रितिका, मयंक गेलड़ा रहे।

✦ *उपदेश सुनने की भावना भी अच्छी बात है। उपदेश की सौ बातें सुनी जाएँगी तो उसमें से दो-चार बातें जीवन में हृदयंगम भी हो सकती हैं, उतर भी सकती हैं।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

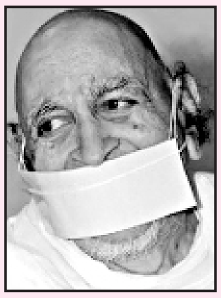

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

शक्ति-संगोपन की साधना

मूल बात तो यह है कि साधक को शक्ति प्राप्त करने के लिए किसी प्रकार का तप करना ही नहीं है। विशुद्ध भाव से कर्म-निर्जरा की दृष्टि से साधना और तपस्या हो उससे प्रासंगिक रूप में शक्ति उत्पन्न हो जाए तो साधक उसे सहन करे, अपने भीतर पचा ले। शक्ति दो प्रकार की होती है—तारक और मारक। तेजोलब्धि एक शक्ति है। इसका विकट रूप जब प्रकट होता है तो एक साथ साढ़े सोलह देश भस्मसात हो सकते हैं। इस शक्ति वाला साधक किसी व्यक्ति पर अनुग्रह करे तो वह मरता-मरता बच जाता है। मारने और बचाने के लक्ष्य से शक्ति का प्रयोग निषिद्ध है, इसी दृष्टि से यह कहा गया है कि शक्ति के अर्जन और संवर्धन के साथ उसका संगोपन बहुत आवश्यक है।

कोई भी साधक तपस्या, आतापना, ध्यान आदि साधना के प्रयोग किस उद्देश्य से करे? इस प्रश्न को समाहित करते हुए आगमों में बताया गया है—'साधक इस लोक के लिए तप और आचार का प्रयोग न करे, परलोक के लिए तप और आचार का प्रयोग न करे, यश, कीर्ति, पूजा-प्रतिष्ठा आदि के लिए तप और आचार का प्रयोग न करे। विशोधन और कर्म-निर्जरण—यही लक्ष्य रहे साधना का। इस लक्ष्य को सामने रखकर चलने वाला ही व्यक्ति का संगोपन कर सकता है।'

एक बात बार-बार सुनने में आती है कि जहाँ इतना बड़ा संघ हो, वहाँ चमत्कार भी होना चाहिए। चमत्कार को नमस्कार की दुहाई देकर उक्त बात की पुष्टि की जाती है। एक दृष्टि से बात ठीक है, आकर्षण पैदा करने वाली है। कभी-कभी मन में भी आ जाती है किंतु आगे चलकर यही चिंतन रहता है कि जहाँ कहीं ऐसे प्रयोग हुए हैं, उन्हें तात्कालिक लाभ अवश्य मिला है, उनकी ख्याति भी हुई है, उन्हें राज्याश्रय और जनाश्रय भी प्राप्त हुआ है। पर उससे आगे का परिणाम सुखद नहीं रहा। शक्ति का प्रयोग करने वालों की गति पहलवान जैसी होती है। पहलवान कितने शक्तिशाली होते हैं। वे अपने हाथ के सहारे भारी-से-भारी वाहन रोक लेते हैं, सीने के बल पर हाथी रोक लेते हैं। कंठ-मणि के सहारे लोह-कील तोड़ देते हैं और भी तपा नहीं क्या-क्या कर लेते हैं। किंतु कुछ वर्षों बाद उनका शरीर जर्जर हो जाता है, वे उठते-बैठते भी काँपते रहते हैं। इन सब स्थितियों को ध्यान में रखकर हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शक्ति-प्रयोग का रास्ता निरापद नहीं है।

शक्ति के प्रयोग पर नियंत्रण के साथ उसके अर्जन और संवर्धन पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होना चाहिए। क्योंकि ऊर्जा का संवर्धन हुए बिना साधना की अग्रिम भूमिकाओं पर आरोहण दुरूह हो जाता है।

साधना एक ऐसा तत्त्व है, जिसे अपनी-अपनी कसौटी पर कसने का काम हो रहा है। कुछ व्यक्ति उसे आनंद का अक्षय स्रोत मानते हैं तो कुछ उससे निराशा और झुंझलाहट की वृत्ति को बढ़ावा देते हैं।

किसी समय एक गाँव में मंदिर बन रहा था। वहाँ अनेक व्यक्ति काम में लगे थे। एक आदमी उधर से गुजरा। उसने एक श्रमिक से पूछा—'भाई! क्या कर रहे हो? वह झल्लाकर बोला—'देखते नहीं हो, पत्थर तोड़ रहा हूँ।' कुछ दूर जाकर उसने दूसरे श्रमिक से वही प्रश्न पूछा। वह बोला—'भाई! पेट पानी है, इसके लिए क्या-क्या नहीं करते?' तीसरे श्रमिक से जब यही बात पूछी गई तो वह खुशी में झूमता हुआ बोला—'भगवान का मंदिर बना रहा हूँ।'

एक ही काम करने वाले तीन व्यक्तियों की अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ इस बात को स्पष्ट करती हैं कि किस स्थिति में कौन व्यक्ति कितना लाभान्वित होता है, यह उसकी ग्रहणशीलता पर निर्भर है। साधना के क्षेत्र में प्रवेश पाने वाले व्यक्तियों में भी उत्तेजना, निराश और आनंद निमित्त रूप में काम कर सकते हैं। पर जो सच्चे मन से साधना करते हैं वे उत्तेजना और निराशा से मुक्त होकर आनंद का अनुभव कर सकते हैं।

शास्त्रों में दो प्रकार की वृत्तियाँ बताई गई हैं—सिंहवृत्ति और सियारवृत्ति। कुछ व्यक्ति सिंहवृत्ति से मुनि जीवन स्वीकार करते हैं और सियारवृत्ति से पालते हैं। कुछ व्यक्ति सियारवृत्ति से साधुत्व ग्रहण करते हैं, पर उसकी अनुपालना में सिंहवृत्ति जग जाती है। कुछ व्यक्ति ग्रहण और पालन दोनों स्थितियों में सियारवृत्ति रखते हैं तो कुछ साधक सिंहवृत्ति से ही आगे आते हैं और उसे अंत तक निभाते हैं।

हमारे ध्यान के साधक किसी भी वृत्ति से साधना-शिविर में प्रवेश करें, यहाँ से निकलते समय सिंहवृत्ति जग जानी चाहिए। इसी वृत्ति से वे अधिकाधिक आनंद का अनुभव कर सकते हैं।

स्वयं सत्य खोजें

बीमारी जितनी लंबी होती है, चिकित्सा भी उतनी ही लंबी हो जाती है। तीन प्रकार की बीमारियाँ होती हैं—शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक। वात, पित्त और कफ के विषम हो जाने पर शरीर में जो रोग पैदा होते हैं, वे शारीरिक बीमारियाँ हैं। चिंता, संत्रास, घुटन, तनाव, विक्षिप्तता आदि मानसिक बीमारियाँ हैं। उत्तेजना, अहं, छलना, लालसा आदि आध्यात्मिक बीमारियाँ हैं। शारीरिक बीमारी की चिकित्सा में महीनों और वर्षों का समय लग जाता है। क्योंकि लंबे समय तक जमकर रहने वाले किराएदार को भी हटाना कठिन हो जाता है फिर बीमारी तो शरीर के रोम-रोम में व्याप्त होकर रहती है। मानसिक और आध्यात्मिक बीमारी का शमन करने के लिए ध्यान का एक दिवसीय प्रयोग कराया जाता है। एक प्रयोग से अपेक्षित लाभ का अनुभव न हो तो दूसरी-तीसरी बार भी प्रयोग किया जाता है।

मूलतः सोचने की बात यह है कि बीमारी क्यों होती है? मेरे अभिमत से नब्बे प्रतिशत बीमारियों का कारण है—व्यक्ति का अपना अज्ञान, अनुभवहीनता, अविवेक और लापरवाही। प्रेक्षाध्यान शिविर में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनों प्रकार का स्वास्थ्य प्राप्त हो सकता है। यहाँ आने वाले साधक को जागरूक बनाया जाता है। उसकी चर्या नियमित हो जाती है। समय पर जागरण और समय पर शयन। भोजन-पानी की नियमितता, घूमने-फिरने की नियमितता। और तो क्या, सोचना भी नियमित। सुबह से शाम तक जो कुछ करना होता है, वह सब नियमित हो जाता है। उस स्थिति में बीमारी को खुराक नहीं मिलती है। उचित खुराक और पोषण के अभाव में पुरानी बीमारी आगे नहीं बढ़ती और नई बीमारी पैदा नहीं होती। जिस अज्ञान, अविवेक और प्रमाद के कारण बीमारी का जन्म हुआ, उन कारणों के न रहने पर बीमारी कैसे रहेगी? 'कारणे नष्टे कार्यं स्वमेव नश्यति'। यह न्याय-शास्त्र का नियम है। जिस दिन से जीवन-चर्या नियमित होने लगती है, उसी दिन से आरोग्य मिलने लग जाता है और व्यक्ति को राहत मिल जाती है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(६८)

महासूर्य के महातेज से हो जाए जग स्नात।
प्राणों के सर में खिल जाए आज नए जलजात।।

भ्रमित हो रहा मनुज देख हिंसा की काली छाया
मंडराता दिन-रात सामने संदेहों का साया
जड़ें काट आस्था की मानव अब दिग्मूढ़ बना है
पक्षाघात हुआ चिंतन को मन कितना अदना है
करो अनुग्रह तुम ले आओ यहाँ ज्योति का झरना
दिशाबोध दो तम-सागर से कैसे पार उतरना
ला सकते तुम ही धरती पर उजला नया प्रभात।।

गिरी साख संस्कृति की बदल गई जीवन की शैली
मानवीय मूल्यों की अवनति गति कितनी अलबेली
वीर-प्रसू धरती भारत की क्यों असहाय बनी है
भाई-भाई बीच अचानक कैसे आज ठनी है
अरमानों में भरो रोशनी पंथ स्वयं दिख जाए
देख दिली उत्साह सामने मंजिल खुद ही आए
बोध प्राप्त कर तुमसे मानव बन जाए निष्णात।।

उभर रही जो जिज्ञासाएँ बना उन्हीं का घेरा
जीवन की अनुपम पोथी का पढ़ पाए हर पैरा
सद्गुण मोती रहे बरसते संवेदन-सीपों से
आश्वासन मिल जाए मन को असंदीन द्वीपों से
स्निग्ध और निर्धूम शिखा-सा आभावलय तुम्हारा
देख तुम्हारी ज्ञानचेतना स्वयं बृहस्पति हारा
मधुर-मधुर मुसकानों से यह बहता सुधा-प्रपात।।

(६९)

जो अभिनव इतिहास बनाए वह संन्यास तुम्हारा है।
नई बहारें लेकर आए वह मधुमास तुम्हारा है।।

स्वर्ण कमल-सा खिला-खिला दिन-रात रजत जैसी धवला
सुबह सुहानी अरुणाभा से संध्या गंगा-सी अमला
कालजयी कर्तृत्व अनूठा आत्म-तेज से है भास्वर
जीवन के संकल्प तुम्हारे आप्तकाम हे ज्योतिर्धर!
संशय से धुंधली आँखों में बस विश्वास तुम्हारा है।।

फूल खिला दे जो पत्थर पर गीत विलक्षण तुम गाते
बदले जो दिनमान सृष्टि का वह अभियान चला पाते
आत्मबोध की विधा विलक्षण त्रास मनुजता का हरते
निरालंब के आलंबन बन जड़ में नव स्पंदन भरते
विश्व-चेतना की धड़कन में हर उच्छ्वास तुम्हारा है।।

स्वप्नों के श्वेताभ देश में घूम रहे तुम हो निर्बन्ध
नए सृजन का बोध दे रहे सरज रहे मानो मधुछन्द
ऋतम्भरा प्रज्ञा से भावित बोल तुम्हारे सुधा-सने
युग की प्रश्नायित आँखों में कैसे मोहक चित्र बने
आत्मलोक की सीमा पर यह विधि-विन्यास तुम्हारा है।।

सौ-सौ सूरज चमके नभ में मिटे न फिर भी अंधियारा
उगे हजारों चाँद भले ही फैल न पाए उजियारा
जहाँ तुम्हारे दिव्य तेज कण बिखर पंथ में थम जाते
वहाँ तमस के पाँव स्वयं ही पीछे हटकर जम जाते
खिला-खिला-सा कमल-सरोवर यह मृदुहास तुम्हारा है।।

(क्रमशः)

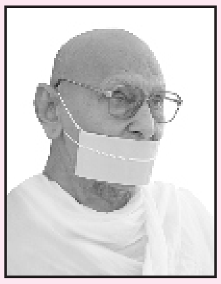

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(२७) **आत्मनः स्वप्रकाशाय, बंधनस्य विमुक्तये।**
आनंदाय मया शिष्य! धर्मप्रवचनं कृतम्।।

शिष्य मेघ! आत्मा के स्व-प्रकाश के लिए, बंधन की मुक्ति के लिए और आनंद के लिए मैंने धर्म का प्रवचन किया है।

(२८) **शुभाशुभफलैरेभिः, कर्मणां बंधनैर्ध्रुवम्।**
प्रमादबहुलो जीवः, संसारमनुवर्तते।।

प्रमादी जीव शुभ-अशुभ फल वाले कर्मों के इन बंधनों से संसार में पर्यटन करता है।

(२९) **शुभाशुभफलान्यत्र, कर्मणां बंधनानि च।**
छित्वा मोक्षमवाप्नोति, अप्रमत्तो हि संयतिः।।

अप्रमत्त मुनि कर्मों के बंधनों और उनके शुभ-अशुभ फलों का छेदन कर मोक्ष को प्राप्त होता है।

धर्म अप्रमत्त-अवस्था है और अधर्म प्रमत्त-अवस्था। प्रमाद का स्वरूप इस प्रकार है—
चार कषाय—क्रोध, मान, माया, लोभ।
चार विकथा—स्त्रीकथा, देशकथा, राजकथा, भोजनकथा।
पाँच इंद्रियाँ—स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र।
इनके विषयों में आसक्ति, मन, वाणी और शरीर की इनमें प्रवृत्ति तथा निद्रा प्रमाद है और जो निवृत्ति है वह अप्रमाद है।

अप्रमत्त आत्मा कर्म-बंधनों से मुक्त होकर शुद्ध स्वरूप में ठहरती है। प्रमादी आत्मा संसार में भ्रमण करती है। संसार दुःख है और मुक्ति सुख। धर्म की अपेक्षा इसलिए है कि उससे अनंत आनंद उपलब्ध होता है।

(३०) **एकमासिकपर्यायो, मुनिरात्मगुणे रतः।**
व्यन्तराणां च देवानां, तेजोलेश्यां व्यतिव्रजेत्।।

एक मास का दीक्षित आत्मलीन मुनि व्यंतर देवों के सुखों को लाँघ जाता है, उनसे अधिक सुखी बन जाता है।

(३१) **द्विमासमुनिपर्याय, आत्मध्यानरतो यतिः।**
भवनवासिदेवानां, तेजोलेश्यां व्यतिव्रजेत्।।

दो मास का दीक्षित मुनि भवनपति (असुरवर्जित) देवों के सुखों को लाँघ जाता है।

(३२) **त्रिमासमुनिपर्याय, आत्मध्यानरतो यतिः।**
देवासुरकुमाराणां, तेजोलेश्यां व्यतिव्रजेत्।।

तीन मास का दीक्षित आत्मलीन मुनि असुरकुमार देवों के सुखों को लाँघ जाता है।

(३३) **चातुर्मासिकपर्याय, आत्मध्यानरतो यतिः।**
ज्योतिष्कानां ग्रहादीनां, तेजोलेश्यां व्यतिव्रजेत्।।

चार मास का दीक्षित आत्म-लीन मुनि ग्रह आदि ज्योतिष्क देवों के सुखों को लाँघ जाता है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

धर्म बोध

शील धर्म

प्रश्न १० : मैथुन विरमण से क्या तात्पर्य है?
उत्तर : स्त्री और पुरुष का युगल मिथुन कहलाता है। मिथुन के भाव विशेष अथवा कर्म विशेष को मैथुन कहते हैं। इस मैथुन-अब्रह्म से विरत रहना मैथुन विरमण है। मोह के उदय होने पर राग परिणाम से स्त्री और पुरुष में जो परस्पर संस्पर्श की इच्छा होती है, वह मिथुन है। उसका कार्य अर्थात् संभोग क्रिया मैथुन है। दोनों के पारस्परिक राग परिणाम के निमित्त से होने वाली चेष्टा है।

प्रश्न ११ : मैथुन सेवन करने वाले के क्या जीव हिंसा का भी पाप लगता है?
उत्तर : एक बार मैथुन सेवन से असंख्य अमनस्क मनुष्यों की हिंसा होती है। इस तरह वह पंचेन्द्रिय वध के पाप का भागी बनता है।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

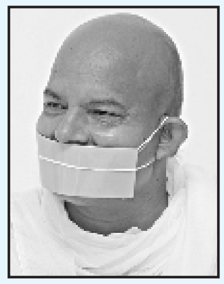

❑ आचार्य महाश्रमण

आचार्य धर्मदासजी

कहा जाता है प्रथम दिन धर्मदास मुनि को भिक्षा में एक कुम्हार के यहाँ से राख मिली। वह चारों ओर उड़ गई। श्री धर्मसिंहजी ने राख के शकुन पर टिप्पणी करते हुए कहा—मैंने जब क्रियोद्धार किया था तब प्रथम भिक्षा में चूरमे का मोदक मिला था। वह मेरे पात्र में चिपक गया था। अतः मेरा संप्रदाय ज्यादा नहीं फैलेगा पर तुम्हारा संघ राख की भाँति सभी ओर फैलेगा। बात बनी भी वही। आज का स्थानकवासी संप्रदाय प्रमुखतः उन्हीं के संघ की शाखा-प्रशाखाएँ हैं। उनके निन्यानबे शिष्य बने।

उन्होंने निन्यानबे शिष्यों में से बाईस को आचार्य पद दिया। इसलिए उनकी वे शाखाएँ बाईस संप्रदाय कहलायी। आगे जाकर स्थानकवासी, साधुमार्गी, ढूँढ़िया, ढूंढेरा, बारहपंथी आदि नामों से पहचाने जाने लगे। अंत में उन्होंने अपने आपको अनायास ही बलिदान की बलिवेदी पर चढ़ा दिया।

घटना यों घटी। वि० १७७२ में उनके एक शिष्य ने धारा नगरी में अनशन किया। किंतु वह अपनी दुर्बलता से उस अनशन में स्थिर नहीं रह सका तब उग्रविहार करके आचार्य धर्मदासजी उज्जयिनी से चलकर धारा नगरी में पहुँचे। उसे समझाया पर कायरता आ जाने के बाद स्थिरता कैसे आ सकती है। सहसा अपने संघ का भार अपने शिष्य मूलचंदजी को सौंपकर स्वयं अनशन करके उसी पट्ट पर लेट गए। संघ का मस्तक ऊँचा रखने के लिए अपने आपको झोंक दिया। केवल तीन दिन के अनशनपूर्वक वि०सं० १७७२ में दिवंगत हो गए।

आचार्य रघुनाथजी

आचार्य रघुनाथजी आचार्य भूधरजी के शिष्य थे। वे सोजत (राज०) के निवासी थे। उनका जन्म वि०सं० १७६६ में हुआ था। उनके पिता का नाम नथमलजी था। एक बार रघुनाथजी अपने परम मित्र की मृत्यु के विरह से व्यथित होकर चामुंडा देवी के मंदिर में शांति पाने अपने आपको बलि करने जा रहे थे। मार्ग में आचार्य भूधरजी से उनका संपर्क हो गया। उन्होंने प्रतिबोध दिया। फलतः संबंध की हुई रत्नवती कन्या को छोड़कर वि०सं० १७८७ में दीक्षित हुए। आचार्य बने। अच्छी तपस्याएँ भी कीं। कुछ ही समय में अच्छे प्रभावशाली आचार्यों की परंपरा में गिने जाने लगे। उन्होंने अपने हाथ से पाँच सौ पच्चीस व्यक्तियों को दीक्षित किया। श्री जेतसिंहजी, जयमलजी, कुशलोजी आदि उनके गुरु भाई थे। श्री टोडरमल जी इनके उत्तराधिकारी थे।

अंत में सत्तरह दिन के अनशनपूर्वक अस्सी वर्ष की अवस्था में वि०सं० १८४६ माघ शुक्ला ११ को पाली में दिवंगत हो गए।

आचार्य भिक्षु

तेरापंथ के प्रवर्तक आचार्य भिक्षु श्रमण परंपरा के महान् संवाहक थे। उनका जन्म वि०सं० १७८३ आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी को कंटालिया (मारवाड़) में हुआ। उनके पिता का नाम शाह बल्लूजी तथा माता का नाम दीपां बाई था। उनकी जाति ओसवाल तथा वंश सकलेचा था। आचार्य भिक्षु का जन्म नाम भीखण था। प्रारंभ से ही वे असाधारण प्रतिभा के धनी थे। तत्कालीन परंपरा के अनुसार छोटी उम्र में ही उनका विवाह हो गया। वैवाहिक जीवन में बंध जाने पर भी उनका जीवन वैराग्य-भावना से ओतप्रोत था। धार्मिकता उनकी रग-रग में रमी थी। पत्नी भी उन्हें धार्मिक विचारों वाली मिली। पति-पत्नी दोनों ही दीक्षा लेने के लिए उद्यत हुए, किंतु नियति को शायद यह मान्य नहीं था। कुछ वर्षों बाद पत्नी का देहावसान हो गया। भीखणजी अकेले ही दीक्षा लेने को उद्यत हुए, पर माता ने दीक्षा की अनुमति नहीं दी। तत्कालीन स्थानकवासी संप्रदाय के आचार्यश्री रघुनाथजी के समझाने पर माता ने कहा—'महाराज! मैं इसे दीक्षा की अनुमति कैसे दे सकती हूँ क्योंकि जब यह गर्भ में था तब मैंने सिंह का स्वप्न देखा था। उस स्वप्न के अनुसार यह बड़ा होकर किसी देश का राजा बनेगा और सिंह जैसा पराक्रमी होगा।' आचार्य रघुनाथ जी ने कहा—'बाई! यह तो बहुत अच्छी बात है। राजा तो एक देश में पूजा जाता है, तेरा बेटा तो साधु बनकर सारे जगत् का पूज्य बनेगा और सिंह की तरह गूँजेगा।' इस प्रकार आचार्य रघुनाथजी के समझाने पर माता ने सहर्ष दीक्षा की अनुमति दे दी।

(क्रमशः)

✦ चौबीस घंटे में दो घंटे का समय भी अगर शुभ योग में बोते तो इसे एक उपलब्धि मानना चाहिए।
—आचार्यश्री महाश्रमण

विकास महोत्सव के विविध आयोजन

विकास के पर्याय थे आचार्यश्री तुलसी

ठाणे

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी एवं साध्वीवृंद के सान्निध्य में विकास महोत्सव का आयोजन मनाया गया। कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण का संगान हुआ। आचार्य तुलसी के अवदानों का बखान करती गीतिका महिला मंडल ने प्रेषित की।

साध्वीश्री जी ने कहा कि आचार्य तुलसी के प्रायोगिक, वैयक्तिक एवं सामूहिक विकास के नए पटल खोले। वे विवाद में नहीं विकास में विश्वास रखते थे। धर्म की काई परिभाषा नहीं निर्विशेष संप्रदाय से प्रवृत्त अणुव्रत आंदोलन प्रारंभ किया। श्रम प्रधान जीवन और दूरदृष्टि का परिणाम है आज का तेरापंथ धर्मसंघ।

साध्वी मधुरयशा जी ने विचार रखे एवं साध्वी श्वेतप्रभा जी ने गीतिका के द्वारा भावांजलि प्रेषित की। सामूहिक गीतिका का संगान साध्वीश्री द्वारा किया गया।

विचार प्रस्तुति की शृंखला में ठाणे सिटी महिला मंडल अध्यक्षा अनिता धारीवाल, उपासक अशोक इंटोदिया, उपासिका प्रतिभा चोपड़ा, तेममं कार्यकारिणी सदस्या रामिला बड़ाला, ठाणे सेंट्रल संयोजिका प्रिया मूथा जुड़े कार्यक्रम का संचालन साध्वी मादर्वयशा जी ने किया। आभार सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष लक्ष्मीलाल सिंघवी ने किया।

कांटाबाजी

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में विकास महोत्सव का आयोजन हुआ। मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण मानवता के कल्याण में व्यतीत किया। आचार्यश्री तुलसी का जीवन विकास का जीवन था। उन्होंने जागते हुए सपने देखे और उन्हें पूरा किया। जीवन में आने वाले कष्टों एवं बाधाओं को सूझ-बूझ से दूर किया तथा विकास के नए-नए कीर्तिमान स्थापित किए। वे न केवल तेरापंथ के विकास की बात सोचते थे, अपितु समग्र जैन धर्म और मानवता के विकास के लिए कार्य करते थे।

प्रेक्षाध्यान की पद्धति और शिक्षा के क्षेत्र में जीवन-विज्ञान जैसा सुवैज्ञानिक पाठ्यक्रम देश की जनता को दिया। अहिंसा की शक्ति से जनता को परिचित कराया। विसर्जन का सूत्र देकर लोगों में अनासक्त चेतना का निर्माण किया। आचार्यश्री तुलसी क्रांतिकारी विचारक थे। उनके चिंतन में विकास परिलक्षित होता था। विरोधों की परवाह न करते हुए अपनी शक्ति को सकारात्मक कार्यों में लगाए रखा। लगभग एक लाख किलोमीटर की पदयात्रा कर उन्होंने अणुव्रत आंदोलन को जन-जन तक पहुँचाया। मीडिया प्रभारी अविनाश जैन ने बताया कि सभा अध्यक्ष युवराज जैन, तेयुप से ऋषभ जैन, तेममं से स्मिता जैन, संजय जैन ने वक्तव्य एवं गीत के द्वारा प्रस्तुति दी।

मदनगंज-किशनगंज

तेरापंथ भवन में विकास महोत्सव एवं शिक्षक दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने कहा कि युगानुरूप समस्याओं के समाधान में गुरु तुलसी का नाम अमर रहेगा। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात करके राष्ट्र में नैतिक व चारित्रिक उत्थान के कार्य का शुभारंभ कर राष्ट्र को नई दिशा दी। आचार्य तुलसी ने राष्ट्रीय विकास के लिए अथक प्रयास किए, उन्हें तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने भारत ज्योति सम्मान से सम्मानित किया साथ ही इंदिरा गांधी एकता पुरस्कार से भी उन्हें सम्मानित होने का सौभाग्य मिला।

मुनि अमन कुमार जी ने कहा कि भारतीय परंपरा में गुरुओं की सदा से महत्ता रही है। चाहे वह शिक्षा गुरु हो अथवा धर्म गुरु। गुरु ही शिष्य का निर्माण कर उसे योग्य बनाने वाले होते हैं।

मुनि सुबोध कुमार जी ने कहा कि विकास का पर्याय रहा है तुलसी का नाम। उन्होंने संघीय विकास के साथ जैन धर्म के विकास में उनका महान योगदान रहा है। जैन धर्म जन-जन का धर्म के रूप में प्रख्यात होना आचार्य तुलसी ने पहचान दी उनके द्वारा आचार्य पद का विसर्जन करना एक साहसिक कदम था, जहाँ लोग पद प्राप्त करने के लिए कितना प्रयत्न करते हैं, वहाँ इतने बड़े धर्मसंघ का आचार्य पद को छोड़ना इतिहास की विरल घटना हो गई।

इस अवसर पर महिला मंडल ने तुलसी स्तवन से मंगलाचरण किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष माणक गेलड़ा, तेयुप के युवकों, महिला मंडल मंत्री करुणा चंडालिया, रितिका बोथरा, नगीना गेलड़ा, कानराज डूंगरवाल, पूनम सांखला ने अपनी भावनाएँ प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री ने किया।

भीलवाड़ा

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में विकास पुरुष आचार्यश्री तुलसी के पद विसर्जन दिवस को तेरापंथ धर्मसंघ में विकास महोत्सव के रूप मे मनाया जाता है।

साध्वी डॉ० परमयशा जी ने कहा कि आचार्य तुलसी का जीवन पर्याय था। उनके द्वारा प्रदत्त अवदानों से यह संघ पूरे विश्व में कोहिनूर की तरह चमक रहा है। साध्वी मुक्ताप्रभा जी, साध्वी कुमुदप्रभा जी ने कविता के द्वारा उस विकास पुरुष की अभिवंदना की।

साध्वी विनम्रयशा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष जसराज चोरड़िया ने अपने विचार व्यक्त किए।

मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि कार्यक्रम में श्रावक समाज ने विविध रूप से अपनी भावनाएँ व्यक्त की। समाज के वरिष्ठ श्रावक नवरतनमल झाबक, सभा सहमंत्री लक्ष्मीलाल झाबक, मदनलाल रांका, संगीत प्रभारी पुष्पा पामेचा, संदीप बोरदिया, राकेश कोठारी, उत्तम सामसुखा, कमला देवी सिरोहिया, दक्ष बड़ोला एवं सिद्धार्थ दुगड़ एवं अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने गीतिका, कविता एवं वक्तव्य के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी। आभार सभा मंत्री योगेश चंडालिया ने व्यक्त किया।

जसोल

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में जसोल कस्बे के पुराना ओसवाल सभा भवन में विकास महोत्सव का कार्यक्रम आयोजित हुआ। तेरापंथ के नवम आचार्य गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी के पट्टोत्सव को विकास महोत्सव के रूप में समूचे धर्मसंघ में मनाया जाता है।

साध्वी सत्यप्रभा जी ने संघीय महोत्सव विकास महोत्सव का इतिहास बताते हुए आचार्य तुलसी की 'विकास पुरुष' के रूप में चर्चा की। आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व की चर्चा करते हुए आपने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें उनसे दीक्षित एवं शिक्षित होने का सुअवसर मिला। साध्वी ध्यानप्रभा जी ने आचार्य तुलसी के जीवन की विरल विशेषताओं का वर्णन करते हुए धर्मसंघ को प्राप्त उनके अवदानों की चर्चा की। साध्वी श्रुतप्रभा जी ने विकास शब्द की व्याख्या करते हुए आचार्य तुलसी के क्रांतिकारी व्यक्तित्व का परिचय प्रस्तुत किया।

इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ तेममं, जसोल ने 'तुलसी अष्टकम्' के मधुर संगान के साथ कार्यक्रम को प्रारंभ किया। कार्यक्रम में महासभा जोधपुर संभाग प्रभारी गौतमचंद सालेचा, जसोल सभा अध्यक्ष उषभराज तातेड़, माणकचंद संखलेचा, सभा मंत्री कांतिलाल ढेलड़िया, महिला मंडल उपाध्यक्ष अरुणादेवी डोसी सहित प्रबुद्ध वक्ताओं ने भी विचार व्यक्त किए। तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा सामूहिक गीतिका का संगान किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी यशस्वीप्रभा जी ने किया।

तपोभिनंदन समारोह का आयोजन

शाहदरा, दिल्ली।

विवेक विहार, ओसवाल भवन में विराजित शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि जब-जब चातुर्मास आता है, जैन धर्म में तपस्या का दरिया लहराने लगता है। यत्र-तत्र सर्वत्र तपस्या की चर्चा-परिचर्चा होने लगती है। इस बार शाहदरा सभा क्षेत्र में तपस्या का अच्छा क्रम चला।

दीर्घ तपस्वी हनुमानमल सेठिया उपस्थित हैं, जिन्होंने प्रबल मनोबल एवं आत्मबल के साथ ६१ दिनों की प्रलंब तपस्या परिसंपन्न की है। मैं इनकी तपस्या के लिए सौ-सौ साधुवाद देती हूँ।

सुश्रावक हनुमानमल ने इस चातुर्मास में नया रिकॉर्ड स्थापित किया है। इतनी प्रलंब तपस्या कर धर्मसंघ की प्रभावना में अपना योगदान दिया है। उनका तपस्या के साथ रोज प्रवचन श्रवण, सामायिक, स्वाध्याय, जप आदि का क्रम सतत चलता रहा। कर्म निर्जरा का लक्ष्य परिपूर्ण करते रहें।

साध्वी परिवार द्वारा एक सामूहिक गीत का संगान किया गया। जिसमें संपूर्ण जनता भी संभागी बनी।

शासनश्री साध्वी सुव्रताजी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ की आधारशिला तपस्या है। आचार्य भिक्षु ने तेले की तपस्या से तेरापंथ का शुभारंभ किया था। तपस्या का जैन दर्शन में बहुत महत्त्व है। शासनश्री साध्वी सुमनप्रभा जी ने कविता की पंक्तियों से एवं साध्वी कार्तिकप्रभा जी व साध्वी चिंतनप्रभा जी ने मधुर गीत से तपस्वी का अभिनंदन किया।

सुजानगढ़ निवासी-दिल्ली प्रवासी हनुमानमल सुपुत्र रूपचंद-बरजीदेवी सेठिया के पूर्व में ७ मासखमण किए व उपवास–बेले-तेले बीच-बीच में चलते रहते हैं। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के संदेश का वाचन युवा गौरव पुखराज सेठिया ने किया।

अनुमोदना के क्रम में गुंजन गुप्ता-निवर्तमान निगम पार्षद, संजय गोयल पूर्व उपमहापौर-ईडीएमसी, पंकज लूथरा, पूर्व निगम पार्षद, दिल्ली सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया, तेयुप दिल्ली के अध्यक्ष विकास सुराणा एवं टीम, तेममं दिल्ली की अध्यक्षा मंजु जैन, शाहदरा सभा अध्यक्ष पन्नालाल बैद, गांधीनगर सभाध्यक्ष कमल गांधी, ओसवाल समाज के मुख्य ट्रस्टी हनुमान बांठिया, तेममं दिल्ली की पूर्व अध्यक्ष तारा बैंगानी सहित अनेक पदाधिकारिगण ने वक्तव्य व गीतिका के माध्यम से भाव प्रकट किए।

कार्यक्रम में सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। तपस्वी हनुमानमल का सभा परिवार व तेममं दिल्ली द्वारा साहित्य व मोमेंटो से सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री आनंद बुच्चा ने किया।

माँ ममता का महाकाव्य

माधावरम्, चेन्नई।

माँ के चरणों में स्वर्ग है। उनके पैरों के नीचे की मिट्टी स्वर्ग की मिट्टी के समान है। माँ एक पूर्ण शब्द है, अकट्य ग्रंथ है, ममता का महाकाव्य है। निम्न विचार तेरापंथी ट्रस्ट द्वारा आयोजित 'माँ की ममता, माँ की महिमा' सेमिनार में मुनि सुधाकर कुमार जी ने व्यक्त किए।

मुख्य अतिथि मद्रास हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश मुनिश्वर भंडारी की विशेष उपस्थिति में मुनिश्री ने कहा कि माँ ममता की मूरत है, समता की सूरत है, त्याग की प्रतिमूर्ति है। माँ त्यागमयी, दयामयी, क्षमामयी, सत्यमयी और स्नेहमयी हाती है।

मुख्य अतिथि मद्रा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश मुनिश्वर भंडारी ने कहा कि महिला परिवार में सूत्रधार के रूप में होती है, परिवार को एक माला में पिरोकर रखती है, एक-दूसरे के मन-मुटाव को मिटाने वाली होती है। वह माँ, बहन, भाभी, पत्नी अनेक रूपों में होती है। अपने कर्तव्य का सम्यग् नियोजन करती है। उन्होंने कहा कि मेरा समाज की बहनों से विशेष निवेदन है कि वे परिवार को जोड़ने वाली बनें। अपने संस्कार और संस्कृति का सही उपयोग कर एक उदाहरण तुल्य बनें।

मुनि नरेश कुमार जी ने कहा कि व्यक्ति में धार्मिकता, प्रमाणिकता, ईमानदारी उनके जीवन व्यवहार में झलके। विशिष्ट अतिथि राज्य अल्पसंख्यक आयोग सदस्य प्यारेलाल पितलिया, स्वरूपचंद दांती ने अपने विचार रखे। माधावरम् ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी घीसूलाल बोहरा ने स्वागत किया। महिलाओं द्वारा मंगलाचरण किया गया। मूलचंद रांका ने मुख्य न्यायाधीश का परिचय दिया। धन्यवाद ज्ञापन हर्षा परमार तथा संचालन प्रेक्षिता संकलेचा एवं सुरेश रांका ने किया। इस अवसर पर संघीय संस्थाओं के गणमान्य व्यक्तियों के साथ जैनेतर समाज के व्यक्ति भी सहयोगी बने।

ज्ञानशाला प्रकोष्ठ राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन

सूरत।

ज्ञानशाला के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में व संस्था शिरोमणि जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के तत्त्वावधान में तेरापंथी सभा के प्रबंधन में ज्ञानशाला प्रकोष्ठ राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन, सिटीलाइट में हुआ।

उद्घाटन सत्र में मुनिश्री ने ज्ञानशाला उपक्रम की जानकारी दी व उसके महत्त्व को बताते हुए कहा कि इमारत की मजबूती जिस तरह पिलर के ऊपर निर्भर करती है, वैसे ही ज्ञानशाला के उपक्रम से जुड़े हुए हर कार्यकर्ता व प्रशिक्षक का महत्त्व है और यही कार्यकर्ता आने वाली पीढ़ी की नींव को मजबूती प्रदान करते हैं।

इस कार्यशाला का उद्देश्य नीति-नियमों पर चिंतन-मंथन कर उसे कैसे क्रियान्वित किया जाए? कैसे कार्यों का नियोजन किया जाए? कार्य में हमारी भूमिका और जवाबदारी को समझकर एक निर्णायक रोल को निभाया जाए। मंगलाचरण ज्ञानशाला प्रशिक्षक द्वारा किया गया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष नरपत कोचर ने सभी का स्वागत किया।

ज्ञानशाला के राष्ट्रीय संयोजक सोहनराज चोपड़ा ने अपना वक्तव्य दिया व ज्ञानशाला के संचालन दायित्व आदि की जानकारी दी। इस अवसर पर डालम नौलखा, निर्मल नौलखा, मधु देरासरिया, अभातेमम महामंत्री, गुजरात आंचलिक संयोजक प्रवीण मेड़तवाल, तेममं अध्यक्ष राखी बैद, मंत्री तेयुप अभिनंदन गादिया ने विचार व्यक्त किए। मंच संचालन सभा के पूर्व अध्यक्ष व कार्यक्रम संयोजक हरीश जैन द्वारा किया गया।

तत्पश्चात परिचय सत्र चला, जिसमें १७ अंचल से पधारे संभागियों, आंचलिक संयोजक, आंचलिक सह-संयोजक के साथ-साथ विशेष आमंत्रित सदस्य, केंद्रीय समिति सदस्य ने अपना परिचय दिया।

द्वितीय सत्र में कई बिंदुओं पर चिंतन चला। मुनिश्री ने कहा कि ज्ञानशाला नेटवर्क, ज्ञानशाला प्रशिक्षक और ज्ञानार्थियों का उपयोग केंद्रीय प्रारूप और परिपत्र में निर्दिष्ट नियमों अनुसार होना चाहिए। जिस समय ज्ञानशालाओं की स्वतंत्र प्रस्तुति हो वहाँ ज्ञानशाला की ड्रेस का उपयोग हो। ज्ञानशाला समय में ज्ञानशाला का ही कार्य हो।

सोहनराज चौपड़ा ने कहा कि स्थानीय स्तर की कोई भी जानकारी प्राप्त करने व प्रेषण का कार्य आंचलिक संयोजक के माध्यम से ज्ञानशाला प्रकोष्ठ तक पहुँचे। स्थानीय रिपोर्ट आंचलिक संयोजक के माध्यम से केंद्र तक पहुँचे।

राष्ट्रीय ज्ञानशाला शिविर प्रशिक्षक निर्मल नौलखा ने बताया कि ज्ञानशाला का २ घंटे का समय किसी भी गतिविधि के लिए बाधित न हो और साथ-साथ एक्स्ट्रा एक्टिविज जो अध्यात्म से जुड़ी हुई हो जो कि ज्ञान का विकास करे, उसे किया जा सकता है।

तृतीय सत्र– आज के इस टेक्नोलॉजी के युग में हम ज्ञानशाला को कैसे आगे रखें? टेक्नोलॉजी के साथ ज्ञानार्थियों को कैसे बढ़ाया जाए? टेक्नोलॉजी द्वारा प्रशिक्षक कैसे अपने ज्ञान में वृद्धि करें, ज्ञानशाला प्रबंधन में टेक्नोलॉजी के साथ कार्य को कैसे सरल बनाएँ आदि विषयों पर जानकारी प्रस्तुत की गई।

दीपक डागलिया, प्रवीण मेड़तवाल, वर्षा जैन, रितु धोका और सोनू पितलिया ने Gyanshala Google, Gyanshala help, Gyanshala App में एसएसबी की बुक्स, पुराने प्रश्न-पत्र, बेसिक जानकारियाँ, एसएसबी पाठ्यक्रम को वीडियो के माध्यम से पढ़ना इस प्रकार की सारी जानकारी दी।

अंतिम सत्र– सभी अंचल के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने अंचल की रिपोर्ट प्रस्तुत की। आंचलिक संयोजकों द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों के किए गए कार्यों से अवगत कराया। कई संयोजकों ने अपने क्षेत्रों की समस्याओं को रखा तथा समाधान पाया।

मुनिश्री ने कुछ बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि जहाँ परिवारों की संख्या कम हो, जहाँ ज्ञानार्थियों की संख्या कम हो, जहाँ आने-जाने में सुविधा न हो, ऐसी जगह सह-ज्ञानशाला चलाकर बच्चों का विकास किया जाए। स्थानीय संयोजक और मुख्य प्रशिक्षिका की लिस्टमय विवरण अपडेट करके ज्ञानशाला प्रकोष्ठ ऑफिस में भेजी जाए।

द्वितीय दिवस : मुनिश्री के सान्निध्य में ज्ञानशाला राष्ट्रीय संयोजक सोहनराज चौपड़ा को जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा-ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के ज्ञानशाला राष्ट्रीय संयोजक के रूप में दी जा रही निरंतर २५ वर्ष की सेवा के उपलक्ष्य में तेरापंथ सभा द्वारा मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया गया। ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के केंद्रीय समिति सदस्य, मुंबई से समागत आंचलिक संयोजक व अन्य सदस्य, थली क्षेत्र के आंचलिक संयोजक द्वारा भी सम्मान किया गया।

इसके पूर्व केंद्रीय समिति सदस्या डॉ० प्रो० रत्ना कोठारी ने सोहनराज चौपड़ा का जीवन परिचय व ज्ञानशाला को दी जा रही सेवाओं व अतीत के पन्नों की जानकारी दी। प्रवचन पश्चात जिज्ञासा-समाधान सत्र चला। राष्ट्रीय संयोजक द्वारा जिज्ञासाओं का समाधान दिया गया।

द्वितीय सत्र में दो दिन चली हुई कार्यशाला का चिंतन-मंथन कर ज्ञानशाला प्रबंधन के संदर्भ में कई प्रस्तावित निर्णय किए गए। मुनिश्री ने इन कार्यशालाओं का महत्त्व बताया।

ई-ज्ञानशाला टीम की सदस्या कल्पना छाजेड़ ने ई-ज्ञानशाला की उपयोगिता बताते हुए खेल-खेल में बच्चों का ज्ञानार्जन कैसे हो इसकी जानकारी दी। ज्ञानशाला राष्ट्रीय संयोजक ने आभार ज्ञापित किया।

अंतिम सत्र में संभागियों ने अपने-अपने विचार रखे। तेरापंथी सभा द्वारा सभी संभागियों का सम्मान किया गया। सभा की तरफ से कार्यशाला संयोजक हरीश जैन और गुजरात अंचल के संयोजक प्रवीण मेड़तवाल द्वारा आभार ज्ञापन किया गया।

प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

सिकंदराबाद।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में साध्वी त्रिशला कुमारी जी सान्निध्य में 'आजादी के अमृत महोत्सव' के अवसर पर प्रेक्षाध्यान का आयोजन किया गया। शिविर का विषय था–'कैसे हम अपने को सुखी एवं स्वस्थ रखें' प्रथम सत्र में योग का सघन प्रशिक्षण दिया गया। थायराइड और सर्वाइकल को दूर करने के प्रयोग साध्वी कल्पयशा जी ने बताए। साध्वीश्री जी ने कहा कि योग हमें केवल निरोग भी नहीं करता है, बल्कि हमारी कार्यक्षमता को भी बढ़ाता है।

दूसरे सत्र में साध्वी रश्मिप्रभा जी ने अनित्य अनुप्रेक्षा का प्रयोग करवाते हुए कहा कि यदि आप आसक्ति को कम करना चाहते हैं और वैराग्य को बढ़ाना चाहते हैं तो अनित्सय अनुप्रेक्षा एक बहुत ही कारगर उपाय है।

साध्वी कल्पयशा जी ने कहा कि आज का व्यक्ति जितना दुनिया के बारे में जानता है, उतना ही अपने आपसे अनजान है। जब हम एक अंगुली दूसरे की ओर करते हैं तो तीन अंगुलियाँ हमें प्रेरित करती हैं कि जितना हम दूसरों को देखते हैं, उससे ३ गुना अधिक अपने आपको देखें। साध्वीश्री जी ने कहा कि सबसे पहले अपने विचारों को देखें, अपने श्वास को देखें। श्वास को देखते-देखते एक दिन ऐसा भी आएगा कि हम आत्म-साक्षात्कार की भूमिका तक पहुँच जाएँगे।

चौथे सत्र में कायोत्सर्ग का प्रयोग करवाया गया। साध्वी संपत्तिप्रभा जी ने जप, योग का प्रयोग करवाया। साध्वी कल्पयशा जी व साध्वी रश्मिप्रभा जी ने स्वस्थ रहने के टिप्स बताए। नविता नाहटा ने प्रेक्षाध्यान की प्रारंभिक जानकारी दी।

शिविर के सफलतम आयोजन में सभा के सहमंत्री धर्मेन्द्र चोरड़िया, हुक्मीचंद कोटेचा, निर्मल बैंगाणी, महेंद्र सुराणा, अरिहंत गुजरानी, प्रकाश दफ्तरी, खुशहाल भंसाली आदि ने योगदान दिया। शिविर में लगभग ७० भाई-बहनों ने भाग लिया।

मासखमण तप अभिनंदन के कार्यक्रम

कांदिवली

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में कनिष्का बरड़िया के मासखमण तप का अनुमोदन किया गया। साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि बरड़िया परिवार भी साधुवाद का पात्र है, जिन्होंने उनकी लाड़ली कनिष्का को विशेष अनुष्ठान के लिए प्रेरित किया। कनिष्का ने प्रबल आत्मशक्ति का जागरण किया है।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि कनिष्का ने १६ वर्ष की लघु वय में विशेष मानसिक शक्ति का परिचय दिया है। अष्ट प्रहरी पौषध के साथ ही यह तपोयज्ञ को नया आयाम दे रही है।

साध्वी मुदितप्रभा जी ने साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के संदेश का वाचन किया। साध्वी लावण्यप्रभा जी, साध्वी कुंदनयशा जी, साध्वी मुदितप्रभा जी तथा साध्वी मधुरप्रभा जी ने गीत का संगान कर तपस्या की अनुमोदना की।

तेरापंथ सभा, मुंबई से नवरत्न गन्ना, पूर्व अध्यक्ष नरेंद्र तातेड़, एसटीएमएफ के अध्यक्ष विनोद बोहरा, तेरापंथी सभा कांदिवली के अध्यक्ष पारस दुगड़, मलाड़ से अध्यक्ष इंदर कच्छारा, तेमम, मुंबई से कन्या मंडल सह-प्रभारी नूतन लोढ़ा मरुधर मित्र मंडल के धनपत सेठिया, तेयुप, कांदिवली अध्यक्ष नवनीत कच्छारा, परिवार से उषा देवी बरड़िया, श्वेता बरड़िया, पूजा जैन आदि ने तपस्वी कनिष्का का अभिनंदन किया। कांदिवली महिला मंडल की बहनों ने गीत के द्वारा कनिष्का का तप अनुमोदन किया।

तप आराधिका विनीता बाफना ने साध्वीप्रमुखाश्री का संदेश कनिष्का बरड़िया को उपहृत किया। मंच संचालन साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने किया।

ठाणे

शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में दो मासखमण तपस्वियों का अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। कल्पना हेमंत जैन ३१ की तपस्या एवं नानालाल बड़ाला २७ की तपस्या के साथ अभिनंदन और अनुमोदना के समारोह में उपस्थित रहे। महिला मंडल कंजूरमार्ग एवं ठाणे द्वारा गीतिका प्रस्तुत की गई।

साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि जैन इतिहास में सभी तीर्थंकर, आचार्य एवं कई साधु-साध्वियों ने उग्र तपस्याएँ की हैं। आध्यात्मिक और संकल्प की मजबूती से ही इस तरह की तपस्या के संकल्प शिखरों चढ़ते हैं।

साध्वी मार्दवयशा जी ने तपस्या शब्द की व्याख्या की। साध्वीवृंद ने गीतिका प्रेषित की। श्री भिक्षु महाप्रज्ञ ट्रस्ट अध्यक्ष निर्मल श्रीश्रीमाल, सभाध्यक्ष रमेश सोनी, सभा मंत्री नरेश बाफना, अणुव्रत समिति, मुंबई से मंत्री वनिता बाफना, सुधा छाजेड़, अणुव्रत समिति, मुंबई निवर्तमान अध्यक्ष रमेश चौधरी, हेमंत जैन व पूजा आदि ने अभिवंदन की। सभी पारिवारिकजनों ने अनुमोदना करते हुए प्रस्तुति दी। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी का संदेश वाचन सभा सहमंत्री राजेश बाफना, सभा कार्यकारिणी सदस्य देवेंद्र पुनमिया ने किया। सभा की ओर से अभिनंदन पत्र का वाचन तेयुप सेंट्रल मंत्री भंवरदास वैष्णव जैन व तेयुप, कोपरी अध्यक्ष पवन बाफना ने किया। तपस्वी नानालाल बडाला ने अपना मनोगत प्रस्तुत किया। परिवार की बहनों ने गीतिका द्वारा बधाई दी।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी श्वेतप्रभा जी ने किया। कार्यक्रम में सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण, सदस्य एवं श्रावकगण अच्छी संख्या में उपस्थित रहे।

सिकंदराबाद

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा द्वारा ३१ उपवास (मासखमण) की तपस्या करने वाली ६१ वर्षीय तपस्वी बहन मानक देवी बेंगवानी का सम्मान तेरापंथ भवन, सिकंदराबाद में किया गया। ६१ वर्ष की आयु में ३१ दिन बिना कुछ खाए सिर्फ पानी के आधार पर तपस्या करना अपने आपमें बहुत बड़ा काम है।

इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने तपस्या की अनुमोदना करते हुए तपस्वी बहन के प्रति मंगलकामनाएँ प्रेषित की। इस अवसर पर तेरापंथी सभा अध्यक्ष बाबूलाल बैद, मंत्री सुशील संचेती, उपाध्यक्ष हिमांशु बाफना, हनुमानमल बैद, सुरपत सिंह, मधुलता बेंगवानी, राजकुमार गुजरानी उपस्थित थे।

कालूगणी महाप्रयाण दिवस का आयोजन

चुरू।

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी प्रशमरति जी के सान्निध्य में आचार्यश्री कालूगणी महाप्रयाण दिवस पर साध्वी कारुण्यप्रभा जी ने आचार्यश्री कालूगणी के जीवन-दर्शन पर अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी शांतिप्रभा जी ने गीत का संगान किया। साध्वी अमितयशा जी ने अपने विचार रखे।

साध्वी प्रशमरति जी ने आचार्यश्री कालूगणी के जीवन के प्रेरक प्रसंग के माध्यम से अपने विचार रखे। इस अवसर पर सुरेश बैद ने भी अपने भावों की प्रस्तुति दी।

✦ *व्यक्ति यह ध्यान दे कि जीवन में बुराइयाँ न पनपें और जो बुराइयाँ जीवन में प्रवेश कर चुकी हैं, उन्हें छोड़ने का प्रयास करना चाहिए।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का आयोजन

जाटाबास, जोधपुर।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य एवं अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का शुभारंभ साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के प्रथम दिवस सांप्रदायिक सौहार्द के अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि अणुव्रत का मंच सभी धर्म-संप्रदायों के समन्वय का मंच है। सौहार्द प्रेमी, मैत्री भावना का मंच है। इसके साथ हिंदु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि विश्वास के साथ जुड़े हुए हैं। सभी धर्मों में मानव धर्म की बात कही गई है।

जीवन-विज्ञान दिवस पर साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि जीवन-विज्ञान स्वस्थ समाज का दर्पण है। स्वस्थ जीवनशैली का प्रशिक्षण है। सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास का नाम है—जीवन-विज्ञान। जीवन-विज्ञान व्यक्तित्व विकास में अभ्यास और प्रयोग दोनों का संतुलन अवतरण अपेक्षित है। आवेश और आवेग पर नियंत्रण सिखाता है जीवन-विज्ञान। नियंत्रण की शक्ति हमारी सोच को, चिंतन को सकारात्मक बनाती है।

प्रेरणा दिवस पर साध्वीश्री जी ने कहा कि अणुव्रत यानी छोटे-छोटे व्रत। एक छोटे से वाक्य में इसका अर्थ है चरित्र विकास के लिए किए जाने वाले संकल्प का नाम है—अणुव्रत। एक छोटा-सा अंकुश हाथी को वश में कर सकता है, एक छोटा सा दीपक सघन अंधकार को नष्ट कर सकता है, एक छोटा सा वज्र पत्थर को चकनाचूर कर सकता है तो अणुव्रत क्या नहीं कर सकता। अणुव्रत मानव में प्राण फूँक देता है। अशांत विश्व को शांति का संदेश देता है।

कार्यक्रम का प्रारंभ मंगलाचरण से साध्वी शिक्षाप्रभा जी द्वारा किया गया। अणुव्रत समिति मंत्री शर्मिला भंसाली द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया। समूह अणुव्रत गीत गायन प्रतियोगिता का कार्यक्रम रहा। जिसमें सभी स्कूलों द्वारा सुंदर मनमोहक प्रस्तुतियाँ दी गई। जिसमें प्रथम स्थान पर सुमेर पुष्टिकर स्कूल, द्वितीय स्थान पर राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक स्कूल और तृतीय स्थान पर बाल विद्या मंदिर पब्लिक स्कूल हिंदी मीडियम रही।

प्रतियोगिता के निर्णायक की भूमिका गोविंद राज पुरोहित और मधुर गायक कमल सुराणा रहे। आभार अणुव्रत समिति के भूतपूर्व अध्यक्ष गोविंद राज पुरोहित द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन मितेश जैन ने किया।

पर्यावरण शुद्धि पर साध्वीश्री जी ने कहा कि आज पूरे विश्व में पर्यावरण की चर्चा चल रही है। आदमी भीतर का पर्यावरण स्वस्थ नहीं है और बाहर का पर्यावरण भी अगर अच्छा नहीं होगा तो हिंसा और महत्त्वाकांक्षा बढ़ती ही जाएगी। ऐसे प्रदूषण को रोकने का एकमात्र साधन है—अणुव्रत। साध्वीश्री जी ने बच्चों को पानी के संयम, नशामुक्ति और पेड़ों को न काटने का संकल्प करवाया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मर्यादा कुमार कोठारी ने कहा कि अणुव्रत पूरे विश्व में शांति और स्वच्छता को स्थापित कर सकता है। गोविंद राज पुरोहित ने सभी का आभार ज्ञापित किया। शर्मिला भंसाली ने कार्यक्रम का संचालन किया। स्कूली बच्चों के बीच चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का विषय था—'पर्यावरण का संरक्षण दायित्व हमारा हर क्षण'। चित्रकला प्रतियोगिता में विभिन्न स्कूलों के ४५ बच्चों ने भाग लिया। सुमेर पुष्टिकर स्कूल, राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, सिवांची गेट, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय अल्प भाषा राज महल थे। साथ ही साध्वी सुमंगलाश्री जी ने मंगलाचरण गीत के द्वारा किया।

पाँचवाँ दिन नशामुक्ति दिवस पर साध्वीश्री जी ने कहा कि नशा नाश का द्वार है। विनाश का कारण है, बुराइयों की जड़, परिवार में झगड़े आदि अनेक कुपरिणाम सामने आते हैं। अपराधी मनोवृत्ति का जन्म यहीं से होता है। नशा इंसान क्यों करता है? प्रारंभ में वह शोक से या संगत से या तनाव मुक्ति के लिए करता है। कारण चाहे कुछ भी हो नशा जो नशीली वस्तुएँ होती हैं। वे दरअसल उत्तेजक मादक होती हैं। जीवन को बरबाद कर देती हैं। आदमी अनेक घातक बीमारियों से ग्रस्त हो जाता है। दृढ़-संकल्प, अणुव्रत के नियम एवं योग साधना से बुरी आदतों से छुटकारा पाया जा सकता है। प्रत्येक इंसान व्यसनमुक्त बने, यह अणुव्रत का अभियान है।

अनुशासन दिवस पर साध्वीश्री जी ने कहा कि जीवन विकास के अनेक घटक हैं। इसमें एक महत्त्वपूर्ण बिंदु है—अनुशासन। जहाँ समूह होगा, वहाँ अनुशासन की अपेक्षा होती है। अनुशासन जीवन की कला है। सामूहिक जीवन में अनुशासन की अनिवार्यता है। अनुशासन का प्रारंभ स्वयं से करना चाहिए, गुरुदेवश्री तुलसी का नारा है—'निज पर शासन फिर अनुशासन'।

सातवें दिन अहिंसा दिवस पर साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि सब जीव जीना चाहते हैं। अतः किसी को दुखी मत करो, पीड़ित मत करो, हनन मत करो, शासन मत करो। यह भगवान महावीर का अहिंसा धर्म है। प्राणों का अतिपात करना ही हिंसा नहीं है। किसी भी प्राणी को कष्ट पहुँचाना भी हिंसा है। मन, वचन, काया से संक्लेशन न देना अहिंसा है। महात्मा गांधी के जीवन में अहिंसा दिग्दर्शन था। उन्होंने राजनीति के क्षेत्र में अहिंसा का प्रयोग किया। गांधी जी का जन्म दिन एवं अहिंसा दिवस के उपलक्ष्य में हर इंसान यह प्रेरणा ले, हम अनावश्यक हिंसा नहीं करेंगे। अपने जीवन में अहिंसा का विकास करेंगे। तेरापंथी सभा अध्यक्ष पन्नालाल कागोत, तेयुप मितेश जैन, अणुव्रत समिति के पदाधिकारीगण ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

उपासक प्रशिक्षण प्रेरणा संगोष्ठी

कोलकाता।

तेरापंथी सभा, कोलकाता के तत्त्वावधान में महासभा भवन में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। तेरापंथी सभा के निवर्तमान अध्यक्ष बुधमल लुणिया, अध्यक्ष उपासक अजय भंसाली ने उपस्थित सभी उपासक-उपासिकाओं का स्वागत अभिनंदन किया।

इस संगोष्ठी में लगभग ४६ उपासक-उपासिकाएँ उपस्थित थे। वरिष्ठ उपासक सुरेंद्र कुमार सेठिया, मालचंद भंसाली, डॉ० प्रेमलता चोरड़िया ने अपने विचारों की अवगति के साथ प्रशिक्षण भी दिया।

उपासक-उपासिकाओं को गंगाशहर में संचालित उपासक संयम साधना केंद्र में अपनी सहभागिता दर्ज करवाने की प्रेरणा दी गई। इस कार्यक्रम का संचालन प्रवक्ता उपासिका सरला सुराणा ने किया।

जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा व तेरापंथी सभा, कोलकाता की व्यवस्था एवं निवर्तमान अध्यक्ष बुद्धमल एवं वर्तमान अध्यक्ष अजय भंसाली का सहयोग संघीय कार्य में उल्लेखनीय रहता है। दोनों सभाओं के प्रति आभार।

✦ *जिन लोगों के लिए साधु बनना संभव नहीं है, उन्हें कुछ अंशों में संयम को स्वीकारने का प्रयास करना चाहिए।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वी धर्मयशाजी की स्मृति सभा

भीलवाड़ा।

साध्वी धर्मयशा जी की स्मृति सभा साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आयोजित की गई। स्मृति सभा में साध्वी परमयशा जी ने कहा कि साध्वी धर्मयशा जी ने आत्मा से परमात्मा, लघु से विराट, स्थूल से सूक्ष्म जगत की ओर प्रवेश, नर से नारायण बनने एवं अखंड शाश्वत सत्य को प्राप्त करने की दिशा में आपके कदम सदैव आगे बढ़ते रहे। आचार-विचार, निष्ठा में आप बेमिसाल थी। गुरुदृष्टि की आराधना में सतत सावधान रहती थी।

आपके सुरों के जादू एवं करिश्माई गीतों से लोक चेतना को मंत्रमुग्ध बनाया। आप उन्नत एवं प्रशस्त जीवन जीते हुए तेरापंथ इतिहास में अमर हो गए। साध्वी धर्मयशा जी एवं मैं संसारपक्षीय बहनें थीं, जिन्होंने एक साथ दीक्षा ग्रहण की। हम संयुक्त परिवार से थे। गोलछा गोत्र में हम दोनों ने बीदासर की धरती पर जन्म लिया। आप मृदु, सरल स्वभाव एवं संघ समर्पित साध्वी थी, जो हर कला में निष्णात थी। आपके ऊपर वर्तमान आचार्य महाश्रमण जी की अच्छी कृपादृष्टि थी।

अंतिम समय में आपने आचार्यों, गुरुओं को अंतमन से वंदन करते हुए संलेखना ली और अपने जीवन का कल्याण किया। आपकी दिव्यता, भव्यता, नियम और आगम निष्ठा हमेशा याद आती रहेगी। संघ में एक अच्छी साध्वी की कमी हो गई। वे अजर, अमर, अक्षय, अव्यय बनें एवं मोक्ष की मंजिल को प्राप्त करें, ऐसी मनोकामना आपने की।

साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने आपके जीवन-वृत्त की अनेक विशेषताओं का उल्लेख किया। साध्वी कुमुदप्रभा जी ने कहा कि आपने उच्च आध्यात्मिक जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। सभा अध्यक्ष जसराज चोरड़िया, महिला मंडल अध्यक्षा मीना बाबेल, वरिष्ठ श्रावक नवरतनमल झाबक, उपासक सुरेश बोरदिया, मदनलाल रांका, पुष्पा पामेचा इन सभी ने दिवंगत साध्वीश्री के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि साध्वीवृंद्ध ने गीत का सामूहिक संगान किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री योगश चंडालिया ने किया।

मेधावी छात्र सम्मान समारोह

कोलकाता।

टीपीएफ की समस्त कोलकाता एवं हावड़ा की शाखाओं ने साथ मिलकर साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभागार, उत्तर हावड़ा में 'मेधावी छात्र सम्मान समारोह' का आयोजन किया। यह समारोह समाज के मेधावी बच्चों, जिन्होंने कक्षा १० अथवा कक्षा १२ में ८५ प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त किए हैं, उनको प्रोत्साहित करने हेतु आयोजित किया जाता है।

समारोह की शुरुआत साध्वी स्वर्णरेखा जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के पावन संगान के साथ हुई। तत्पश्चात टीपीएफ फेमिना विंग ने मंगलाचरण का संगान किया। साध्वीश्री जी ने उपस्थित सभी लोगों को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए आगमिक संदर्भ में मेधावी का अर्थ बताया। उन्होंने कहा कि 'जो सत्य की आज्ञा में जीता है, वह सही मायने में मेधावी होता है।' उन्होंने सभी बच्चों को बुद्धि के विकास के साथ-साथ प्रज्ञा के जागरण के लिए विशेष पुरुषार्थ हेतु प्रेरित किया।

टीपीएफ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रकाश मालू ने सभी को टीपीएफ की विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया। टीपीएफ के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री सुशील चोरड़िया ने टीपीएफ के गठन एवं विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। टीपीएफ सेंट्रल कोलकाता के सहमंत्री प्रतीक दुगड़ ने सभी को मेधावी सम्मान के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

टीपीएफ साउथ कोलकाता के अध्यक्ष आलोक चोपड़ा, कोलकाता सेंट्रल के वरिष्ठ सदस्य अशोक पारख, साउथ हावड़ा के अध्यक्ष मनोज सेठिया, पूर्वांचल शाखा के अध्यक्ष प्रवीण सुराणा ने सभी बच्चों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना की।

इसके पश्चात सभी शाखाओं के पदाधिकारियों ने अपने-अपने क्षेत्रों के बच्चों को मेडल एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया। हुगली शाखा के बच्चों को खुशबू नाहटा ने पुरस्कृत किया। पूर्वांचल से महक बैंगानी ने मेधावी सम्मान पर गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में टीपीएफ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रकाश मालू, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री सुशील चोरड़िया, कोलकाता सभा अध्यक्ष एवं टीपीएफ सेंट्रल कोलकाता के कार्यसमिति सदस्य अजय भंसाली, कोलकाता सभा के निवर्तमान अध्यक्ष बुधमल लुणिया सहित अनेक पदाधिकारियों एवं कासर्यसमिति सदस्यों तथा सदस्यों का उल्लेखनीय योगदान रहा।

आभार ज्ञापन टीपीएफ साउथ हावड़ा की मंत्री निकिता मणोत ने किया। कार्यक्रम का संचालन कोलकाता सेंट्रल शाखा की संगठन मंत्री निधि कोचर ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
17 - 23 अक्टूबर, 2022

संयम की आराधना का महापर्व - पर्युषण

बीकानेर।

साध्वी कनकरेखा जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व की आराधना हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई। अखंड जप, तेले की आराधना के साथ जप का शुभारंभ ग्यारह जोड़ों के साथ किया गया।

साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि संयम की आराधना का पर्व है—पर्युषण। पर्युषण पर्व हम सबके भीतर संयम का दीप प्रज्वलित करने की प्रेरणा लेकर आता है। भोगों से त्याग की ओर, राग से विराग की ओर प्रस्थान करने के लिए पर्युषण महापर्व की साधना की जाती है।

खाद्य संयम दिवस : साध्वीश्री जी ने कहा कि इस अष्टाह्निक उत्सव में हमें तप, जप, ध्यान, स्वाध्याय के साथ विशेष रूप से कषाय उपशमन की साधना करनी है। हम हित-मित-सात्त्विक आहार का प्रयोग करें। इंद्रिय और मन पर संयम करें, जिससे हमारी साधना सुचारु रूप से चलती रहे। साध्वी गुणप्रेक्षाश्री जी ने कहा कि 'जैसा खाएँ अन्न वैसा होये मन'। इस उक्ति को चरितार्थ करते हुए कब, कैसे, कितना खाएँ, इस पर विस्तार से विश्लेषण किया।

खाद्य संयम दिवस पर स्वाति, विचित्रा, सुधा, नीतू कोठारी द्वारा सुमधुर मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। संचालन ललिता बोथरा ने किया।

स्वाध्याय दिवस : साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि आत्मदर्शन का दर्पण है—स्वाध्याय। स्वाध्याय से आत्मा पर जमी हुई कालिमा को दूर कर उसे पावन बनाया जाता है। लब्धियों, सिद्धियों के साथ स्वाध्याय हमें आत्म-विद्या का ज्ञान करवाता है। साध्वी अर्हतप्रभा जी ने सत्साहित्य के स्वाध्याय की विशेष प्रेरणा दी। ज्योति, संगीता, रेखा, स्नेहा, रजनी, ललिता बोथरा ने मधुर स्वर लहरी के साथ वातावरण को संगीतमय बना दिया। रेणु बोथरा ने संचालन किया।

सामायिक दिवस : कार्यक्रम का शुभारंभ पूजा नौलखा, कविता बेद, कविता रांका ने संवाद शैली के साथ स्वर प्रस्तुति दी। साध्वी केवलप्रभा जी ने अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया। साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि अध्यात्म का लोकप्रिय अंग है—सामायिक, जिसमें समत्व की साधना का विशेष प्रयोग किया जाता है। अमूल्य सामायिक अनुष्ठान के महत्त्व को उजागर करते हुए शुद्ध सामायिक करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर अनेक बहनों ने सामायिक की पचरंगी की। रात्रि में अभिनव अंत्याक्षरी की प्रस्तुति रही। संचालन नीतू रामपुरिया ने किया।

मौन दिवस : साध्वीवृंद ने तीर्थंकर स्तुति के साथ कार्यक्रम प्रारंभ किया। मौन दिवस पर साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि सामाजिक संबंधों का आइना है—वाणी। वाणी में बहुत बड़ी शक्ति है, इसलिए अनावश्यक न बोलें, हितकारी, प्रिय व मधुर बोलें। साध्वी संवरयशा जी ने अपने भाषण में कई घटना-प्रसंगों को लेकर वाणी के महत्त्व को बताया। कुसुम अनुराधा, आशा बैंगानी, सरिता सुराणा, सुरभि झाबक की मौन दिवस पर स्वर प्रस्तुति रही। संचालन स्वाति कोठारी ने किया। मौन पचरंगी अनुष्ठान का विशेष क्रम चला।

अणुव्रत चेतना दिवस : साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि अणुव्रत के छोटे-छोटे संकल्पों से हम अपने चरित्रबल को ऊँचा उठाएँ, संप्रदायातीत धर्म है—अणुव्रत। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात कर हर मानव को मानवता की राह दिखाई। इस अवसर पर मुख्य वक्ता प्रोफेसर सुमेरचंद जैन ने अणुव्रत की चर्चा की। किशोर मंडल से प्रांशु, भाग्य, भरत, हर्षित, रचित, हिमांशु, गौतम ने अणुव्रत गीत का संगान किया।

रात्रिकालीन कार्यक्रम में साध्वीश्री जी एवं साध्वीवृंद द्वारा 'संस्मरणों का वातायन' सरस प्रस्तुति रही। संचालन साध्वी संवरविभा जी ने किया।

जप दिवस : महावीर स्तुति के साथ साध्वी गुणप्रेक्षाश्री जी, साध्वी संवरविभा जी, साध्वी केवलप्रभा जी व साध्वी हेमंतप्रभा जी ने प्रस्तुति दी। साध्वीश्री जी ने कहा कि शक्ति जागरण का विशिष्ट प्रयोग है—जप। साधक जप से साधना का सुरक्षा कवच तैयार करता है। जप की निरंतर साधना से आधि-व्याधि-उपाधि से हटकर साधक समाधि का वरण करता है। साध्वी हेमंतप्रभा जी ने जप की विशेषता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन देविका बोथरा ने किया। सुनीता सुराणा, अनुराधा, संगीता, मीनू सुराणा, कंचन कोठारी, चंद्रकला महात्मा ने गीत का संगान किया।

ध्यान दिवस : साध्वीश्री जी ने कहा कि बहिर्यात्रा से अंतर्यात्रा करने का नाम है—ध्यान। आज आम आदमी टेंशन से भरा है। टेंशन फ्री लाइफ के लिए गुरुदेव तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षाध्यान का आयाम देकर संपूर्ण मानव जाति को जीने की कला सिखाई। आत्म साक्षात्कार गीत की प्रस्तुति सभा मंत्री सुरेश बेद व सुंदरलाल झाबक की रही। संचालन महिला मंडल मंत्री अंजु बोथरा ने किया। साध्वी रिद्धिश्री जी ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वीश्री जी ने तपस्वियों की अनुमोदना में गीत का संगान किया।

संवत्सरी महापर्व : साध्वी कनकरेखा जी ने पर्युषण उपासना परिषद को संबोधित करते हुए कहा कि अध्यात्म की चेतना को जगाने पर्युषण महापर्व आया है। जो हमें तप, त्याग, संयम की ओर अग्रसर करता है। साध्वीश्री जी ने संवत्सरी महापर्व मनाने की परंपरा का विस्तार से वर्णन किया। साध्वीश्री जी ने भगवान महावीर के साधना काल का रोचक वर्णन सुनाया। साध्वी अर्हतप्रभा जी ने चंदनबाला के जीवन-दर्शन के साथ अभिग्रह की प्रस्तुति की। साध्वीवृंद ने संवत्सरी महापर्व की गीतिका के स्वर मुखरित किए। इससे पूर्व साध्वी गुणप्रेक्षाश्री जी ने आर्षवाणी का श्रवण करवाया। साध्वी संवरविभा जी, साध्वी ऋद्धियशा जी व साध्वी हेमंतप्रभा जी ने जैन शासन के प्रभावक आचार्यों का स्वर्णिम इतिहास सुनाया। साध्वी संवरयशा जी ने निन्हव व साध्वी केवलप्रभा जी ने गणधरवाद की विशेष जानकारी दी।

पर्युषण काल में नमस्कार महामंत्र का अखंड जप चला। जिसमें प्रायः अनेक भाई-बहनों ने भाग लिया। पौषध व्रत की आराधना में संभागिता अच्छी रही। सायंकालीन प्रतिक्रमण में भाई-बहनों की सराहनीय उपस्थिति रही।

मैत्री दिवस पर साध्वीश्री जी ने सबको मैत्री, प्रेम व करुणा से पारस्परिक व्यवहार करने आह्वान किया। राग-द्वेष की ग्रंथि का भेदन कर क्षमायाचना करने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर अध्यक्ष पद्म बोथरा, सुरेश बैद, मंत्री उपाध्यक्ष अभय सुराणा व हुकमीचंद बोथरा का सहयोग रहा।

ज्ञानदीप प्रतियोगिता का आयोजन

कांटाबाजी।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में मुनि कुमुद कुमार जी द्वारा ज्ञानदीप प्रतियोगिता तेयुप के तत्त्वावधान में छः चरण में आयोजित की गई। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि स्वाध्याय हमारे ज्ञान को प्राप्त करने एवं बढ़ाने का माध्यम है। अज्ञानी रूपी अंधेरे को स्वाध्याय ही दूर करता है।

भारतीय साहित्य सद्शिक्षा का भंडार है। तीर्थंकर भाषित एवं ऋषि, मुनि, गृहस्थ साधकों ने भी अपनी लेखनी के द्वारा विश्व को ज्ञान रूपी अमृत दिया है। ज्ञानदीप प्रतियोगिता के माध्यम से जो ज्ञान प्राप्त किया है उसका पुनरावर्तन होता रहे। अर्पित ज्ञान को बढ़ाने के साथ दूसरों को बाँटने का प्रयत्न करें। स्वाध्याय से अनेक जिज्ञासाओं का समाधान हो जाता है। अज्ञान रूपी अंधेरे को गुरु दूर कर देते हैं। मुनि कुमुद कुमार जी ने ज्ञान के विकास के लिए सुंदर उपक्रम चला।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि आठ कर्म हमारे आत्मविकास के लिए घातक हैं। मोक्ष प्राप्ति के लिए इन कर्मों का क्षय होना जरूरी है। पहला कर्म ज्ञानावरणीय है जो ज्ञान प्राप्ति में बाधक बनता है। ज्ञानावरणीय कर्म को दूर करने के लिए अधिक से अधिक स्वाध्याय करना चाहिए। ज्ञान एवं ज्ञानी की आशातना से बचना चाहिए। ज्ञानदीप प्रतियोगिता में दर्शन, इतिहास, तत्त्व, तेरापंथ धर्मसंघ के साथ सामान्य ज्ञान का भी समावेश किया गया।

मीडिया प्रभारी अविनाश जेन ने बताया कि मुनि कुमुद कुमार जी द्वारा प्रस्तुत ज्ञानदीप प्रतियोगिता छः चरण में आयोजित हुई। प्रत्येक चरण में प्रथम, द्वितीय, तृतीय विजेता को तेयुप ने सम्मानित किया। तेयुप अध्यक्ष अंकित जैन ने प्रायोजक शाखा प्रभारी गौतम बेलपाड़ा का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में नवनीत जैन, दीपक जैन, अंकित जैन, गौरव जैन, ऋषभ के० जैन का योगदान रहा। कार्यक्रम का संचालन अंकित जैन एवं ऋषभ जैन ने किया।

पारिवारिक सौहार्द अनुष्ठान का आयोजन

विशाखापट्टनम्।

मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में 'पारिवारिक सौहार्द अनुष्ठान' और 'पारिवारिक सौहार्द' विषय पर मुनिश्री का प्रवचन हुआ।

प्रारंभ में मुनिश्री ने चयनित मंत्रों द्वारा 'पारिवारिक सौहार्द अनुष्ठान' करवाया, जिससे तेरापंथ भवन आध्यात्मिक मंत्रों से गूँज उठा।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि जहाँ सौहार्द रहता है वह परिवार धरती पर स्वर्ग समान बनता है। जहाँ प्रेम है वहाँ यश, धन आदि अपने आप आते हैं। सास-बहू में विनय और वात्सल्य का व्यवहार रहे। माता-पिता के प्रति संतान सम्मान दे। वृद्ध हो भले लेकिन उनके पास अनुभवों का खजाना होता है। पति-पत्नी एक-दूसरे को सहन करें, विश्वास रखें, धन्यवाद का भाव रखें तो दाम्पत्य जीवन शांतिपूर्ण बन सकता है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि बच्चों को सत् संस्कार जरूर दें। संस्कार ही विरासत है। आज के बच्चे ही कल का भविष्य हैं।

मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि पारिवारिक सौहार्द के लिए वाणी संयम और सहिष्णुता का अभ्यास बहुत जरूरी है। बिना वाणी संयम और सहिष्णुता के पारिवारिक सौहार्द संभव ही नहीं।

एपिटोम ऑफ एस्पेक्टो शिविर

राजराजेश्वरी नगर।

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में तेममं के तत्त्वावधान में कन्या मंडल द्वारा आयोजित एक दिवसीय शिविर का शुभारंभ कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। कन्या मंडल प्रभारी सुधा दुगड़ ने सभी का स्वागत किया। महिला मंडल अध्यक्ष लता बाफना ने विचार प्रस्तुत किए। सभा अध्यक्ष छतर सेठिया, तेयुप अध्यक्ष कौशल लोढ़ा ने शिविर हेतु शुभकामनाएँ प्रेषित की।

शासनश्री साध्वीश्री ने कहा कि कन्याएँ दो कुलों को उजागर करती हैं। उनमें बचपन से ही संस्कारों का संपोषण होना चाहिए। साध्वी अर्हमप्रभा जी ने २४ तीर्थंकर एवं स्वास्थ्य के बारे में रोचक बातें बताई। साध्वी रत्नप्रभा जी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। लगभग २१ कन्याओं ने शिविर में भाग लिया। शिविर के समायोजन में मंत्री सीमा छाजेड़, संयोजिका प्रेक्षा सुराणा का सहयोग रहा। संचालन सह-संयोजिका आर्य संचेती ने किया। आभार सह-प्रभारी पूनम दुगड़ ने किया।

सजोड़े सामूहिक भक्तामर अनुष्ठान का आयोजन

सवाई माधोपुर।

मुनि सुमति कुमार जी के सान्निध्य में सजोड़े सामूहिक भक्तामर अनुष्ठान का आयोजन अणुव्रत भवन, आदर्शनगर में हुआ।

मुनि सुमति कुमार जी के उद्‌बोधन के साथ ८१ जोड़ों ने सामायिक पाठ के साथ भक्तामर स्तोत्र का सामूहिक जप कर अनुष्ठान किया। भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान के आयोजन में सम्मिलित होने व देखने के लिए सवाई माधोपुर की विभिन्न कॉलोनियों के श्रावक-श्राविकाएँ अणुव्रत भवन में उपस्थित हुए। मुनि देवार्य कुमार जी ने भक्तामर की महत्ता को बतलाया, उन्होंने मुनि सुमति कुमार जी के ४५वें दीक्षा दिवस पर आध्यात्मिक मंगलभावना प्रस्तुत की। मुनि सुमति कुमार जी ने अनुष्ठान के आध्यात्मिक महत्त्व की जानकारी देते हुए अपने संयम जीवन में सहयोग के लिए आचार्यश्री महाश्रमण जी सहित विभिन्न आचार्यों व मुनिवृंद का आभार ज्ञापित किया। समाज की ओर से अध्यक्ष धर्मराज जैन ने आभार ज्ञापित किया।

✦ अणुव्रत के रूप में नैतिकता व्यक्ति के जीवन में आ जाए तो वह परिवार के लिए, समाज के लिए, देश के लिए और विश्व के लिए कल्याणकारी बात हो सकती है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

जन-जन की आस्था का केंद्र - साधना का प्रज्ञापीठ

जयपुर।
श्रीमद् जयाचार्य जी का १४२वाँ निर्वाण दिवस तेयुप के तत्त्वावधान में रामनिवास बाग स्थित साधना का प्रज्ञापीठ पर साध्वीवृंद के सान्निध्य एवं अर्चना शर्मा व अभातेयुप के संगठन मंत्री श्रेयांस गोठारी की उपस्थिति में मनाया गया।

परिषद के अध्यक्ष सुरेंद्र नाहटा ने इस अवसर पर पधारे हुए सभी अतिथियों व महानुभावों का परिषद परिवार की ओर से स्वागत किया।

साध्वी समितप्रभा जी ने गीतिका के माध्यम से श्रीमद् जयाचार्य जी के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अध्यात्म के क्षेत्र में उन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना कर एक कीर्तिमान स्थापित किया था।

साध्वी विदितप्रभा जी ने कविता के माध्यम से बताया कि तेरापंथ धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य सिद्ध योग साधक, विविध विधाओं में लकीर से हटकर लिखने वाले साहित्यकार, विकास के प्रकाश श्रीमद् जयाचार्य जी ने शिक्षा के क्षेत्र में, तकनीकी क्षेत्र में, अध्यात्म के क्षेत्र में, विज्ञान के क्षेत्र में अनेकों अवदान प्रदान करते हुए जन-जन को अनुशासन एवं मर्यादा का पाठ पढ़ाया है।

साध्वी मधुलेखा जी ने कहा कि 'निज पर शासन फिर अनुशासन' का अनुसरण किया जाए तो विश्व की अनेक समस्याओं का समाधान स्वयं के आत्ममंथन करने से मिल सकता है।

साध्वी शीलयशा जी ने कहा कि संत जयाचार्य जी आचार्य परंपरा के अनुसार जैन तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य थे, पर उनके द्वारा बताया गया मर्यादा और अनुशासन का पाठ जन-जन के लिए जीवन का आधार स्तंभ है और रहेगा।

अभातेयुप के संगठन मंत्री श्रेयांस कोठारी ने कहा कि मर्यादा तेरापंथ का प्राण तत्त्व है। जयपुर और जयाचार्य जी के नाम में जय है और देखा जाए तो तेयुप जयपुर के कार्यों की चारों तरफ जय-जयकार हो रही है।

कार्यक्रम के प्रायोजक ओमप्रकाश जैन ने कहा कि सन् १९९१ से श्रीमद् जयाचार्य जी के महाप्रयाण दिवस पर श्रद्धांजलि समारोह आयोजित होते हुए आज ३२ साल हो गए। श्रीमद् जयाचार्य बहुत ही प्रभावक आचार्य हुए थे, उन्होंने अपने जीवन काल में साढ़े तीन लाख पद्य परिमाण साहित्य की रचना की थी।

समाज कल्याण बोर्ड, राजस्थान सरकार से अर्चना शर्मा ने कहा कि इस देश में अनेकों महापुरुष ऐसे हुए हैं जिन्होंने देश को शिक्षा के क्षेत्र में, तकनीकी के क्षेत्र में, अध्यात्म के क्षेत्र में, विज्ञान के क्षेत्र में अनेकों अवदान दिए हैं, पर ऐसे संत भी हमारे देश में हुए हैं, जिन्होंने अनुशासन और मर्यादा का पाठ भी प्रस्तुत किया है। श्रीमद् जयाचार्य जी की निर्वाण स्थली साधना का प्रज्ञापीठ जो कि राजस्थान की हृदय स्थली रामनिवास बाग में स्थित है, वह आज जन-सामान्य को मानवता का संदेश दे रही है।

परिषद के मंत्री अविनाश छाजेड़ ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप सदस्यों द्वारा विजय गीत के संगान से हुआ। महिला मंडल ने गीतिका का संगान किया। समारोह में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष डॉ० नरेश मेहता, कार्यक्रम के प्रायोजक ओमप्रकाश जैन, तेयुप अध्यक्ष सुरेंद्र नाहटा, महिला मंडल आदि ने वक्तव्य एवं गीत के माध्यम से श्रीमद् जयाचार्य जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजक सिद्धार्थ गधैया, श्रीकांत बोरड़, सौरभ पटावरी, सह-संयोजक हेमंत दस्सानी, अंकित घोड़ावत, रिषभ जैन सहित परिषद के सभी कार्यकर्ताओं का श्रम उल्लेखनीय रहा। कार्यक्रम का संचालन सिद्धार्थ गधैया व श्रीकांत बोरड़ ने किया।

प्रायोजक बाबूलाल राजेश कुमार छाजेड़ परिवार एवं अतिथियों का मोमेंटो व साहित्य भेंट कर परिषद के द्वारा सम्मान किया गया।

जानें अपने तीर्थंकरों को

अमराईवाड़ी।
शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में तेयुप ने 'जानें अपने तीर्थंकरों को' की विशेष प्रस्तुति कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। कार्यक्रम में सवाल-जवाब द्वारा तीर्थंकरों के बारे में रोचक एवं अनसुनी जानकारियाँ साध्वी संवेगप्रभा जी द्वारा प्राप्त हुई। साध्वी संवेगप्रभा जी ने श्रावक समाज के प्रत्येक सवालों का जवाब बड़ी सुंदर तरीके से उदाहरण द्वारा समझाया।

तीर्थंकरों के बारे में इन दो दिवसीय कार्यक्रम में श्रावक समाज को तीर्थंकरों के बारे में काफी अच्छी जानकारी प्राप्त हुई। साध्वी संवेगप्रभा जी ने तीर्थंकरों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मीडिया प्रभारी मुकेश सिंघवी ने किया।

इसी क्रम में तृतीय दिवस तेयुप द्वारा 'इतिहास के अनछूए पहलू' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने इतिहास के गर्भ में छिपी हुई रोचक जानकारियाँ प्रदान की। साध्वी सरस्वती जी ने आचार्यश्री जयाचार्य की एक विलक्षण घटना का वर्णन भी बहुत ही रोमांचित तरीके से किया।

साध्वी नंदिताश्री जी ने ॐ अभिराशि को नमः के बारे में सुंदर वर्णन किया एवं तपस्वी पर विशेष घटनाओं का जिक्र भी विस्तृत रूप में किया।

कार्यक्रम का संचालन तेयुप के मीडिया प्रभारी मुकेश सिंघवी ने किया। समस्त श्रावक समाज को इतिहास में छुपी हुई रोचक जानकारियाँ प्राप्त करके हर्ष की अनुभूति हुई।

इसी शृंखला में चतुर्थ दिन तेयुप द्वारा 'नींव के पत्थर' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साध्वी नंदिताश्री जी ने इतिहास के पन्नों में चमत्कारिक साध्वी छगनाजी के बारे में इतिहास के गर्भ में छुपी हुई रोचक जानकारियाँ समस्त श्रावक समाज को दी। साध्वी छगनाजी के चमत्कार के बारे में बहुत-सी अनसुनी बातें बताई। तेरापंथ धर्मसंघ में ऐसी बहुत-सी साध्वियाँ हुई हैं, जिनके साथ चमत्कार की घटनाएँ जुड़ी हुई हैं।

कार्यक्रम का संचालन मीडिया प्रभारी मुकेश सिंघवी ने किया। समस्त समाज को इतिहास में छुपी हुई बातों एवं तेरापंथ धर्मसंघ के बारे में जानने का अवसर मिला।

संस्कार निर्माण शिविर

राजाराजेश्वरी नगर, बैंगलुरु।
शासनश्री साध्वी शिवमाली जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा, राजाराजेश्वरी नगर के द्वारा संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में राजाराजेश्वरी एवं केंगेरी ज्ञानशाला से लगभग ७० बच्चों ने भाग लिया। शासनश्री साध्वी शिवमाला जी ने कहा विनयभाव ज्ञान प्राप्ति का आधार है। गुरु के प्रति विनयभाव रखने वाले शिष्य ज्ञानाराधना में भी शीर्ष पर पहुँच जाते हैं। बच्चे सत्यम् शिवम् सुंदरम् का शिवालय होते हैं। बच्चों ने भिक्षु अष्टकम से मंगलाचरण किया। प्रशिक्षिकाओं ने प्रेरणात्मक गीत से शुभारंभ किया। साध्वी अर्हमप्रभा जी ने बच्चों को रोचक खेल खिलाए। मुद्राओं का ज्ञान, मुक्तक कविता, दोहे आदि भी सिखाए गए। ज्ञानशाला प्रभारी प्रिया छाजेड़, राजाराजेश्वरी नगर, श्रीमती पूनम दक-केंगेरी तथा सभी प्रशिक्षकों ने शिविर को सफल करने के लिए अपना श्रम नियोजित किया। ज्ञानशाला प्रभारी विकास दुगड़ ने व्यवस्थित तैयारी की। सभाध्यक्ष छतरसिंह सेठिया ने सभी का स्वागत करते हुए शिविर प्रयोजक श्रीमती गुलाब देवी छाजेड़ का सम्मान किया। संयोजन हेमराज सेठिया ने किया। शिविर कार्यक्रम का संचालन श्रीमती वंदना भंसाली ने तथा अमिता छाजेड़ ने आभार व्यक्त किया।

मास्टर ऑफ सेरेमनी कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर।
अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा भारत में पहली बार दो दिवसीय मास्टर ऑफ सेरेमनी कार्यशाला का आयोजन अर्हम भवन में किया गया। एम०ओ०सी० कार्यशाला का शुभारंभ मुनि रश्मि कुमार जी के मंगलपाठ से हुआ। तेयुप अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा ने पधारे हुए सभी प्रतिभगियों एवं प्रशिक्षकों का स्वागत किया। दो दिवसीय कार्यशाला में मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत एवं सह-प्रशिक्षक बबीता रायसोनी द्वारा इवेंट में एम०सी० बनने की बारीकियों के बारे में विस्तार से बताया और हर पहलू की जानकारियाँ दी। सभी प्रतिभागियों को एकल एवं समूह में विविध प्रकार के टास्क के द्वारा विविध प्रकार के कार्यक्रमों को कैसे संचालन करना, इसका सरल एवं प्रभावी प्रशिक्षण दिया गया।

दीक्षांत समारोह
कार्यशाला के दीक्षांत समारोह का आयोजन अर्हम भवन में किया गया। अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत की अध्यक्षता में कार्यक्रम की विधिवत् शुरुआत हुई। विजय गीत का संगान विजय स्वर संगन के साथियों द्वारा किया गया। अभातेयुप महामंत्री द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। परिषद अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा ने सभी का स्वागत किया। दो दिवसीय कार्यशाला में प्रतिभागियों ने चरितार्थ करते हुए अपने आपको इस काबिल बनाया कि वे एम०सी० के रूप में इवेंट होस्ट कर सकें।

मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत, बबीता ने अपने विचार व्यक्त किए। सीपीएस के राष्ट्रीय प्रभारी सतीश पोरवाड ने सभी प्रतिभागियों को बधाई देते हुए सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना की। कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी, तेरापंथ टाइम्स के कार्यकारी संपादक एवं परिषद पूर्व अध्यक्ष दिनेश मरोठी, अभातेयुप साथी महावीर टेबा, परिषद के पूर्व अध्यक्ष महेंद्र टेबा, परिषद पदाधिकारी, सीपीएस के राष्ट्रीय एवं जोनल ट्रेनर्स आदि की उपस्थिति रही। कार्यशाला संयोजक अरविंद दक एवं गौरव चोपड़ा का विशेष सहयोग रहा।

कार्यक्रम के समापन सत्र में सभी प्रतिभागियों के अभिभावक भी उपस्थित रहे। संचालन परिषद उपाध्यक्ष विकास बांठिया ने किया एवं आभार मंत्री राकेश पोखरना ने किया।

क्लींजिंग थैरेपी शिविर का आयोजन

वसई।
साध्वीप्रज्ञाश्री जी के सान्निध्य में एवं तेयुप के तत्त्वावधान में डॉ० पीयूष सक्सेना (पीएचडी नेचुरोपैथी, यूएसए) द्वारा क्लींजिंग थैरेपी शिविर का आयोजन किया गया।

किस तरह हम स्वयं बॉडी के महत्त्वपूर्ण पार्ट जैसे किडनी, लिवर, लंग्स, महिलाओं की समस्या, गॉल ब्लैडर क्लींजिंग, एसिडिटी आदि समस्याओं का निराकरण कर सकते हैं, इन विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई।

साध्वीप्रज्ञाश्री जी ने कहा कि जब तक हम प्रकृति के करीब थे तब तक स्वस्थ थे, लेकिन जैसे ही पैक्ड फूड पर निर्भर हुए, हमने विभिन्न बीमारियों को आमंत्रित किया है। इसलिए दवा पर निर्भर रहने से ज्यादा हम घर में मिलने वाले स्वास्थ्यवर्धक सामान का उपयोग करें।

डॉ० पीयूष ने बताया कि किस तरह एप्सम साल्ट ऑलिव ऑइल जूस से हम घर पर ही लिवर क्लिंज कर सकते हैं।

कार्यक्रम में विभिन्न समाज के सदस्यों की उपस्थिति रही। अभार तेरापंथ सभा के मंत्री भगवतीलाल चौहान ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह

अररिया कोर्ट।
तेयुप के नव निर्वाचित अध्यक्ष पंकज बोथरा एवं उनकी टीम का शपथ ग्रहण कार्यक्रम तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। नेपाल, बिहार, झारखंड सभा अध्यक्ष भैरूदान भूरा ने शपथ पत्र का वाचन किया, जिसे वर्तमान अध्यक्ष पंकज बोथरा ने दोहरण। उसके पश्चात पंकज बोथरा ने अपनी कार्यसमिति के पदाधिकारियों एवं कार्यसमिति सदस्यों को शपथ दिलाई।

वर्धमान इंटरनेशनल स्कूल जयपुर को मिला जय तुलसी विद्या पुरस्कार

बच्चों में ज्ञान और आचार दोनों के विकास से होगा अच्छी पीढ़ी का निर्माण : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ७ अक्टूबर, २०२२

अनंत आस्था के आस्थान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में कहा गया है कि दुनिया में दो प्रकार के पदार्थ होते हैं–मूर्त और अमूर्त। मूर्त पदार्थों में कईयों को तो इंद्रिय विषयों से देखा जा सकता है। हर मूर्त पदार्थ आँखों से देख लिया जाए वो तो कठिन है, जैसे परमाणु।

आँखों से जो देखे जाएँगे वो तो मूर्त ही होंगे पर सारे मूर्त पदार्थ आँखों से देखे ही जा सकेंगे यह नियम बनना मुश्किल है। वहाँ हेतु और तर्क का उपयोग हो सकता है। अमूर्त है, उनको आँखों से नहीं देखा जा सकता। छः द्रव्यों में एक पुद्गलास्तिकाय ही मूर्त है, बाकी पाँच अमूर्त होते हैं। अमूर्त पदार्थ का साक्षात्कार अतीन्द्रिय ज्ञान से संभव हो सकता है।

आँखों से जो देखे जाएँगे वो तो मूर्त ही होंगे पर सारे मूर्त पदार्थ आँखों से देखे ही जा सकेंगे यह नियम बनना मुश्किल है। वहाँ हेतु और तर्क का उपयोग हो सकता है। अमूर्त है, उनको आँखों से नहीं देखा जा सकता। छः द्रव्यों में एक पुद्गलास्तिकाय ही मूर्त है, बाकी पाँच अमूर्त होते हैं। अमूर्त पदार्थ का साक्षात्कार अतीन्द्रिय ज्ञान से संभव हो सकता है।

कुछ पदार्थ ऐसे हैं, जो हेतुगम्य हैं। कुछ पदार्थ अहेतुगम्य हैं। प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? जहाँ प्रत्यक्ष नहीं है वहाँ हेतु का उपयोग किया जा सकता है। प्रत्यक्ष-आर्षवाणी अहेतुगम्य है। आत्मा अमूर्त है, पर हेतु से उसके बारे में जाना जा सकता है। निश्चय में तो सर्वज्ञ ही जान सकते हैं। नास्तिकवाद का चारवाक दर्शन तो वर्तमान को ही मानता है। आस्तिकवाद के अनुसार इस जीवन के बाद भी हमारा अस्तित्व रहेगा। वर्तमान जीवन तो थोड़ा है। आगे का क्या पता, पर आगे पुनर्जन्म हो भी सकता है। पुनर्जन्म है या नहीं पर पाप करने में क्या लाभ हुआ। अच्छा जीवन जीएँ, इसमें दोनों ओर लाभ है। हम आत्मवाद के संदर्भ में समझें कि पुनर्जन्म या परलोक के बारे में संदेह होने पर भी गलत काम को छोड़ दो, अच्छे काम करो। आत्मा या पुनर्जन्म है ही नहीं, इसका क्या आधार है?

धर्मास्तिकाय-अधर्मास्तिकाय अमूर्त है, पर वो है तो ठीक, न है तो ठीक। हमारा तो मूल संबंध आत्मा से है। इससे हमारा हित-अहित का संबंध है। आत्मा है, पुनर्जन्म है, यह मानकर ही चलना चाहिए। इसी अनुसार हमें अपनी जीवनशैली सुनिश्चित करनी चाहिए।

पूज्यप्रवर ने कालूयशोविलास का सुंदर विवेचन किया। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

जैन विश्व भारती द्वारा जय तुलसी विद्या पुरस्कार समारोह का आयोजन पूज्यप्रवर की सन्निधि में हुआ। २०२१ का पुरस्कार श्री वर्धमान इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर को प्रदान किया गया। विद्यालय की ओर से कमल सेठिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। छापर सभाध्यक्ष विजय सेठिया जो ट्रस्ट परिवार से भी संबंधित हैं, अपनी भावना अभिव्यक्त की। यह पुरस्कार चौथमल सेठिया परिवार, छापर द्वारा प्रदान किया जाता है।

पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि विद्या का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व होता है। विद्यालय विद्या आदान का महत्त्वपूर्ण साधन भी बनता है। विद्यालयों में अनेक विषयों के साथ संस्कार विद्या, अध्यात्म विद्या का क्रम भी चलते रहना चाहिए। जीवन-विज्ञान से अच्छे संस्कार दिए जा सकते हैं। ज्ञान और आचार दोनों अच्छे होते हैं, तो अच्छी पीढ़ी का निर्माण हो सकता है। वर्धमान इंटरनेशनल स्कूल, वर्धमान बनते हुए विकास का प्रतीक बनें। स्कूल नैतिक मूल्यों के उन्नयन में, विद्यार्थियों में संस्कार निर्माण करने में आगे बढ़ता रहे, सजग भी रहे। जैविभा इस समारोह की आयोजक है, खुद बड़ी संस्था है। शिक्षा से जुड़ा संस्थान है, चौथमल सेठिया ट्रस्ट परिवार भी धार्मिक, आध्यात्मिक सेवा देता रहे। परिवार में धार्मिक संस्कार पीढ़ी-दर-पीढ़ी आते रहें।

जैविभा द्वारा 'रोशनी का अध्याय' जो साध्वी सुमनश्री जी की कृति है, पूज्यप्रवर के करकमलों में अर्पित की गई। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

सेठिया परिवार द्वारा गीत की प्रस्तुति हुई। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

हमारे भीतर ज्ञान की लौ जलती.....

(पृष्ठ १६ का शेष)

नरक में नैरियक होता है, उनमें उद्योत होता है या अंधकार होता है? उत्तर दिया गया नरक में अंधकार होता है। क्योंकि नरक में पुद्गलों का अशुभ परिणमन होने का कारण निरंतर अंधकार बना रहता है। क्योंकि वहाँ शुभ परिणमन के हेतु भूत सूर्य आदि प्रकाशक चीजों का अभाव है। नरक में सौरमंडल सूर्य चंद्रमा आदि नहीं होता। देवलोक में भी सौरमंडल तो नहीं होता है, किंतु वहाँ रत्नों का प्रभा मंडल है, उससे वहाँ निरंतर प्रभास्वरता बनी रहती है। इस कारण शुभ

पुद्‌गल होने से वहाँ निरंतर उद्योत बना रहता है।

नरक और देवलोक में दिन-रात का विभाग नहीं होता। एकेंद्रिय, द्विन्द्रिय और त्रिन्द्रिय प्राणियों के निरंतर अंधकार बना रहता है, कारण इने चक्षु होती नहीं है। चतुरिन्द्रिय व तिर्यंच और मनुष्य पंचेन्द्रिय के चक्षुरिन्द्रिय का विकास होता है। वे सूर्य के संपर्क में आते हैं, इसलिए उनमें उद्योत भी होता है। रात्रि का भी अनुभव करते हैं, इसलिए अंधकार भी होता है। हमारी सृष्टि में उद्योत और अंधकार दोनों होते हैं।

भारत में भी कहीं उद्योत है, कहीं अंधकार है, ये सूर्य सापेक्ष स्थिति होने से हो सकती है। जहाँ सूर्य है, उद्योत है, वहाँ अंधकार को टिकने का मौका नहीं मिलता है। दीपावली का समय आ रहा है। दीपावली ज्योति पर्व और उल्लास का पर्व होता है। ये बाहर का प्रकाश है।

हमारे भीतर ज्ञान का ऐसा प्रकाश हो जाए कि अज्ञान का अंधकार न रहे। मैं अज्ञान को छोड़ता हूँ, ज्ञान को स्वीकार करता हूँ। हमारे भीतर ज्ञान की लौ जलती रहे। ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम है, साथ में अध्ययन है और भीतर से जाग जाए तो ज्ञान का प्रकाश रह सकता है। जहाँ सूर्य है, वहाँ अंधकार टिक नहीं सकता, यह एक दृष्टांत से समझाया।

साहित्य ज्ञान विकास का साधन है। कितना साहित्य भारत के पास है। गुरुदेव तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने कितने साहित्य का संपादन, सृजन किया था। हमारा ज्ञान का उद्योत बढ़ता है, यह काम्य है। है, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर ने कालू यशोविलास का विस्तृत विवेचन किया। तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। पूज्यप्रवर ने मुलुंडवासियों को आशीर्वचन फरमाया। मुलुंड में अच्छा काम होता रहे।

समणी विनीतप्रज्ञा जी एवं समणी जगतप्रज्ञा जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। अमृतवाणी के नवमनोनीत अध्यक्ष रूपचंद दुगड़ ने अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की। उन्होंने अपनी टीम की घोषणा की। पूज्यप्रवर ने अमृतवाणी की टीम को भी आशीर्वचन फरमाया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि सर्वज्ञों की वाणी पर हमारा अटूट विश्वास होना चाहिए। उसी से हमारा कल्याण हो सकता है।

✦ इंद्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।
—आचार्यश्री महाश्रमण

व्यक्ति शरद चंद्र की तरह शुक्लता की ओर अभिमुख होने का प्रयास करे : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ९ अक्टूबर, २०२२

साधना के श्लाका पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आज आश्विन पूर्णिमा है। चातुर्मास का एक माह शेष। शरद पूर्णिमा का चंद्रमा और उसकी चाँदनी। चाँदनी का भी अपना महत्त्व है। सृष्टि की व्यवस्था है, एक कृष्ण पक्ष आता है, फिर शुक्ल पक्ष आता है। इस सृष्टि की व्यवस्था को हम अपने जीवन में भी कभी-कभी अनुभव कर सकते हैं। प्रतिकूलता-अनुकूलता की स्थिति जीवन में आती-जाती रहती है।

एक महीने में कृष्ण पक्ष भी है और शुक्ल पक्ष भी है। चाँदनी शुक्ल पक्ष में होती है, तो कृष्ण पक्ष में भी होती है। पर यश पुण्य से मिलता है। अभिमुखता अंधेरे की ओर है, तो कृष्ण पक्ष है। अभिमुखता शुक्लता की ओर है, तो शुक्ल पक्ष है। कृष्ण पक्ष में अंधेरा बढ़ता जाता है। शुक्ल पक्ष में चाँदनी बढ़ती जाती है। हमारी अभिमुखता किस तरफ है, यह चिंतन का विषय है।

जीवन में भय का कारण हिंसा और असत्य वचन है। अहिंसक के लिए अभय होना भी आवश्यक है। हमारी अभिमुखता ईमानदारी की ओर हो। लेश्या कृष्ण भी होती है और शुक्ल भी होती है। कृष्ण लेश्या के परिणाम हिंसा आदि हैं। शुक्ल लेश्या के परिणाम वीतरागता के हैं। मैं शुक्ल लेश्या से संपन्न बनूँ।

हमारे जीवन में चाँदनी रहे, चाँदनी बढ़े। अर्हत् शरद चंद्र सम श्वेत होते हैं। भक्तांबर में तो कहा गया है कि अर्हत् तो चंद्रमा से भी ज्यादा श्वेत है। उनमें बीतराग भाव है। हम चंद्रमा की तरह शुक्ल लेश्या की तरफ प्रयाण करें। हमारे परिणामों में निर्मलता रहे। प्रेक्षाध्यान के चौथे चरण में पूर्णिमा के चंद्रमा की तरह श्वेत रंग का ध्यान करवाया जाता है। श्वेत रंग शीतलता का प्रतीक है। इससे कषायमंद पड़ते हैं। चंदन शीतल है, पर चंद्रमा चंदन से भी शीतल है। हम शरद चंद्र की तरह श्वेत की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करें।

पूज्यप्रवर ने कालू यशोविलास का सुंदर विवेचन किया। किरण देवी तातेड़, बीकानेर ने ३४ की तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि असत्यभाषी व्यक्ति कभी भय से मुक्त नहीं हो सकता। जो भयग्रस्त व्यक्ति है, वो व्यक्ति कभी अपने जीवन में सुख का अनुभव नहीं कर सकता। हमें भय की ग्रंथि को संतुलित रख कार्य करना है। भय से डरने वाला विकास कर सकता है। रचनात्मक भय निर्माण की ओर ले जाने वाला होता है। अभय व्यक्ति ही आगे बढ़ सकता है।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि हमें कषायों से बचने का प्रयास करना चाहिए। इससे हमारा सम्यक्त्व पुष्ट होता है। मंद कषाय वाला व्यक्ति अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में सम रह सकता है। मन को संतुलित रख सकता है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

हमारे भीतर ज्ञान की लौ जलती रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ११ अक्टूबर, २०२२

तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल आगम वाणी का रसास्वाद कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया कि भंते! दिन में उद्योत और रात्रि में अंधकार है, यह बात ठीक है? गौतम! हाँ ऐसा है। प्रश्न किया गया कि ये किस अपेक्षा से? उत्तर दिया गया कि दिन में शुभ पुद्गल होते हैं। पुद्गलों का परिणमन शुभ होता है। रात्रि में अशुभ पुद्गल होते हैं और पुद्गलों का परिणमन अशुभ होता है।

उद्योत और अंधकार ये दोनों पुद्गल के परिणमन हैं। दिन में सूर्य रश्मियों के संपर्क से पुद्गलों का परिणमन शुभ होता है। इसलिए दिन में उद्योत होता है। रात्रि में सूर्य रश्मि तथा प्रकाशक वस्तुओं के अभाव में पुद्गलों का परिणमन अशुभ हो जाता है। ये सारी बातें हमारे संदर्भ में हो गई।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

दीक्षा की घोषणा

पूज्य गुरुदेव युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने महत्ती कृपा कर मुमुक्षु मुदित की मुनि दीक्षा ८ दिसंबर २०२२ को सिरियारी में फरमायी है

कार्तिक कृष्ण अमावस्य/भगवान महावीर निर्वाण दिवस पर

- लोगुत्तमे समणे णायपुत्ते (दिन-रात हेतु जप) – रात्रि बारह बजे से पूर्व
- महावीर स्वामी केवलज्ञानी गौतम स्वामी चउनाणी – रात्रि बारह बजे के बाद
- महावीर का परिनिर्वाण—गौतम पाए केवलज्ञान – अंगूठे अमरित बसे, लब्धि तणा भंडार। – गौतम गुरु-गुरु में बड़ो, मन वांछित दातार।।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**